श्री स्वामिनारायण

जान्युआरी २०१०

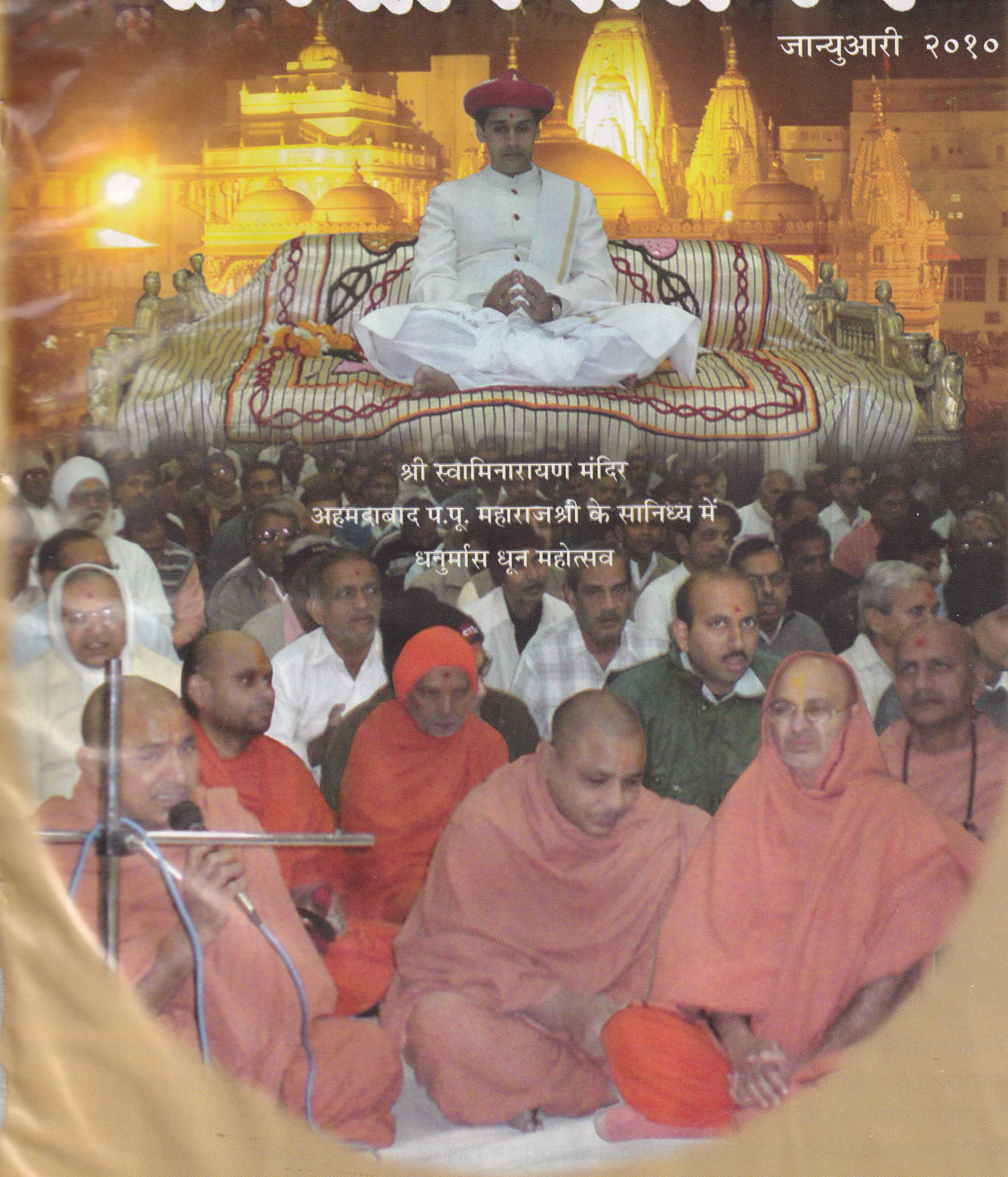

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

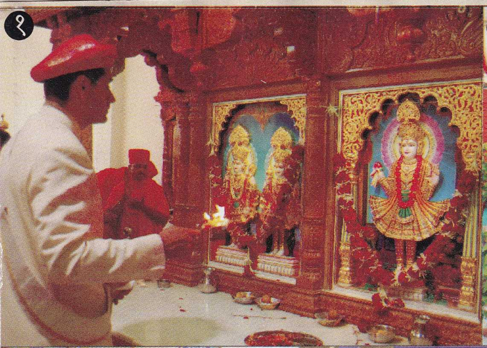

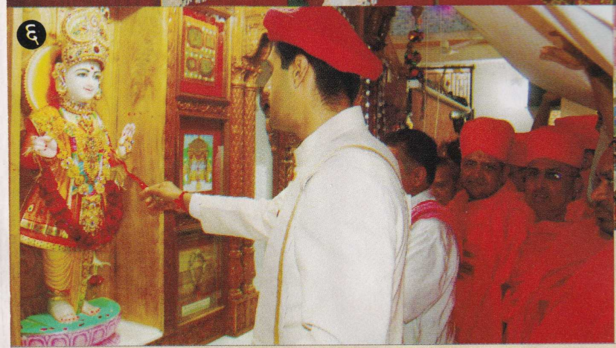

१-२ जमीयतपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री एवं आशीर्वाद देते हुए आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री ।३ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से.-२३ त्रिशताब्दी महोत्सव के अवसर पर पुस्तकों का विमोचन करके आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । ४ मोटेरा गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान श्री तथा कथामृत का रसपान कराते हुए पूज्य शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी । ५ आंत्रोली मंदिर के सभा में आशीर्वाद देते हुए बड़े महाराजश्री एवं प.पू. आचार्य महाराजश्री । ६ आंत्रोली मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए आचार्य महाराजश्री । ७ ईश्वरपुरा (बदपुरा) गाँव में एन.डी. चौधरी के पारायण प्रसंग पर प.पू.महाराजश्री की आरती उतारते हुए हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ३ अंक : ३३ जनवरी-२०१०

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम् २

२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ३

३. दान ४

४. जाके प्रिय न राम बैदेही ५

५. पेशवा सरकार जाने के बाद सहजानंद स्वामी अहमदाबाद में पुनः पधारे ७

६. हितकारी श्रीहरि प्रेम में बंधाये ८

७. रोकडिया हुमानजी - जीरागढ ९

८. श्रीहरि के धाम के प्राप्ति का उपाय १०

९. सत्संग सुरभि ११

११. सत्संग बालवाटिका १२

१०. भक्ति सुधा १५

१२. प्रश्न पेटी १८

१३. सत्संग समाचार १९

सम्पादकीय

जनवरी मास अर्थात् अंग्रेजी वर्ष का प्रथम मास । नूतन वर्ष का मास । इसके साथ १४ जनवरी का दिन अर्थात् मकर संक्रांति का दिन । उत्तरायण का दिन । संक्रांति काल अर्थात् दान पुण्य का पवित्र अवसर ।

सूर्य का मकर राशि में प्रवेश, दक्षिण से उत्तर में अयन । इस पवित्र काल में किया गया दान पुण्य तथा सत्कर्म अनंतगुना फल देनेवाला होता है । यह शास्त्र तथा संत एवं विद्वानों का मत है । ऐसे पवित्र काल में विशेष दान पुण्य तथा भजन भक्ति करके हरि की प्रसन्नता प्राप्त करनी चाहिए । इसके साथ ही योगानुयोग उत्तरायण के बाद वसंत का आगमन भी हो रहा है । वसंत अर्थात् ऋतुओं का राजा । भगवान भी गीता में कहते हैं कि ऋतुओं में मैं वसंतऋतु हूँ । वसंत अर्थात् पतझण में सुखकर गिरे हुये पत्तों की जगह नवीन कोमल पत्तों के आने का आरंभ काल तथा उसमें भी वसंत पंचमी अर्थात् हम सभी के लिये उभय आनंद देने वाला दिन, एक तो श्रीजी महाराज द्वारा प्रवर्तित परंपार के अनुसार रंगोत्सव का दिन तथा दूसरी तरफ हम सभी के सुख तथा मोक्ष के लिये श्रीहरिने अपने हाथों से प्रसन्न होकर लिखी गयी शिक्षापत्री का जयंती दिन । परमात्माने अपने हाथ में कलम लेकर यदि कोई शास्त्र लिखा हो तो वह है शिक्षापत्री अद्वितीय ग्रंथ । उत्तरायण, वसंत तथा शिक्षापत्री का त्रिवेणी संगम, इस पवित्र मास में हम सभी अपने जीवन को काल, माया के दक्षिण में से प्रभु की भक्ति के उत्तर तरफ लेजांय । अपने मन के सभी सूखे पाप तथा जड़ प्रकृति वाली मान्यता की सड़न रुपी पत्तों को गिराकर प्रभु प्रीति तथा प्रभु प्रतीति के नूतन रंग में भक्ति तथा वैराग्य-समर्पण रुपी किंसुक के रंग में रंगकर तथा शिक्षापत्री जयंती के पावन अवसर पर अपने सुख रुपी चाभी का स्मरण करके, महाराज द्वारा जो हम सभी को सुख मिला है उसका चिन्तन करते हुये शिक्षापत्री की आज्ञा का विशेष रुप से पालन करें यही हम सभी का सच्चा वसंत है ? अन्यथा जन्मजन्मान्तर तक पतझण-पतझण ही है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२००९)

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघजीना मुवाडा दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४. ईश्वरपुरा (बदपुरा) गाँव में श्री एन.डी. चौधरी के यहाँ कथा प्रसंग पर पदार्पण।

५. लालोडा (त. इडर) गाँव में पटेल मोहनभाई अमीचंदभाई तथा पटेल जेठाभाई अमीचंदभाई के यहाँ पदार्पण।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

७. श्री दासभाई पटेल सावलिया लालजीभाई नाराणभाई तथा हसमुखभाई सामत्रा के यहाँ पदार्पण-बापूनगर।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों के) नारीचाणा (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री हरेन्द्र दवे के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर अखीयाणा (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर रामपुरा (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२-१३. श्री स्वामिनारायण विश्रांति भवन मुंबई पदार्पण।

१४. श्री वल्लभभाई परसोत्तमदास बाबरिया के यहाँ पदार्पण, शीलज रोड, थलतेज।

१५. श्री सुरेन्द्रभाई सी. पटेल (विशालावाला) के चित्रों के प्रदर्शन के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, गुज. युनि. के सामने नवरंगपुरा।
श्री बाबूभाई शंभुभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, हीरावाडी।

१६. धनुर्मास धुन प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती करके धुन में पधारे।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर धुन तथा नये आश्रितों को गुरुमंत्र प्रसंग पर पधारे।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर जुंडाल स.गु. महानुभावानंद स्वामी के २२५ वें जन्म जयंती तथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
देत्रोज गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२६-२७. मुंबई थाणे में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२८. मोटेरा गाँव में भजन संध्या प्रसंग पर पदार्पण.

३०. मोटप श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७. **प.पू. लालजी महाराजश्री :** श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२३) में पधारे।

दान

- शा. स्वा. अभयप्रकाशदास गुरु
महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

दान के विषय में बहुत सुना गया है । शास्त्रो में बहुत लिखा भी है। दान को धर्म का आभूषण कहा गया है। तन की शुद्धि स्नान करने से होती है । मन की शुद्धि हरिगुण गाने से होती है । इसी तरह धन की शुद्धि दान करने से होती है। इसीलिये तो अपने परिश्रम के कमाये धन में से दशवां या वीसवां भाग भगवान को अर्पण करते हैं।

भगवान स्वामिनारायण ने भी शिक्षापत्री के १४३ वें श्लोक में हम सभी को आज्ञा की है कि जिस उद्यम से आप धन अर्जन करते हैं उस धन का दशवां भाग भगवान श्रीकृष्ण को अर्पण करना । जो धन से दुर्बल हैं वे वीसवां भाग अर्पण करें ।

श्रीमद् सत्संगिजीवन में शतानंद स्वामी दान की तिथि भी निश्चित किये हैं । जैसे - कार्तिक शुक्ल नवमी, माघ शुक्ल सप्तमी, वैशाख शुक्ल द्वितीया, अपने जन्म नक्षत्र के दिन, अन्नकूट आदिक उत्सव के दिन, मकर संक्रांति के दिन, सूर्य-चन्द्रग्रहण के दिन दान की खूब महिमा है।

नीति शतक में धन की तीन गति बताई गयी है। पहली दान दूसरी भोग तथा तीसरी गति नाश बताई गयी है । कमाये हुये धन का दान करे तो उसे पुण्य प्राप्त होता है । भोग में भरण-पोषण होता है । लेकिन ये दोनो न करें तो धन का नाश होता है । ऐसी कहावत है कि "जैसा बोवे वैसा मिले" अपने पास भगवत कृपा से धन प्राप्त हो गया हो तो उसका सद्व्यवहार करना चाहिये । इसी से जीवन में सुख मिलता है। धन होते हुए जो परमार्थ में नही लगाते वे दुःखी होते हैं।

जिस तरह बैंक में पैसे रखे हो, हम जब भी चाहते हैं वह मिलता रहता है । इसी तरह पर लोक रुपी बैंक में भी पुण्य, परोपकार, धन को रखे होंगे तो परलोक में या अन्य जन्मों में भी मिलता रहेगा । दान का दो विभाग है प्रथम यह कि धन का दान जन्मान्तर में सुखी बनाता है या स्वर्गीय सुख प्रदान करता है जिसे हम पुण्य कहते हैं । दूसरा यह कि भगवान की आज्ञा है इसलिये हम दान करते हैं। ऐसा भाव रखकर जो दान किया जाता है उसे भक्ति में गिना जायेगा । इसका फल भगवान प्रसन्नता तथा भगवत धाम की प्राप्ति । इसीलिये निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि -

जावुं छे, रे जावुं छे, रे आयो जमणे हाथ रे,
आवे साथे रे, जीव जावुं छे ।
जावुं छे, रे जावुं छे, रे माल धन मेली,
ठालुं ठेली रे, जीव जावुं छे ॥

शास्त्र में ऐसा कहते हैं कि मनुष्य जब जन्मता है तो साथ में कुछ भी नहीं लेकर आता तथा मरता है तब भी कुछ लेकर नहीं जाता । हां लेकर आता है या लेकर जाता है तो मात्र पुण्य एवं पाप कर्म का फल ।

दो धनवान सगे भाई थे । उसमें एक सदाचारी तथा दानी था, जिससे वह अनकों स्थान पर दान पुण्य करता दुःखियों के दुःख में काम आता । दूसरा लोभी था तथा श्रद्धा बिना का था । इसलिये वह दान पुण्य नहीं करता था । समय वीतते प्रथम भाई जो दानी था वह विमार पड़ा इसलिये उसका दूसरा छोटा भाई रुपये लेकर गया और कहने लगा हे भाई हम आपसे उधार रुपये ले गये थे, उसे देने के लिये लाया हूँ । तब बड़ा भाई बोला, अब मैं रहनेवाला नहीं हूं इसलिये जब तूं परलोक आना तब इसे लेते आना यह धन मुझे वहाँ काम आजायेगा । यह सुनकर छोटा भाई बोला कुछ भी साथ नहीं आता है । तुम्हारा

(अनुसंधान नं. ६ पर)

जाके प्रिय न राम बैदेही

- साधु घनश्यामप्रकाशदास, जमीयतपुरा (महंत माणसा)

तुलसीदासजी एक अच्छे कवी थे, संत थे, एक निष्ठ उपासक थे। जो भी थे प्रभु को समर्पित भक्त थे। प्रभु के प्रेम में इतना पागल थे कि हरि के विना सारा जगत जहर लगता था। इसीलिये वे लिखे हैं कि -

"जाके प्रिय न राम बैदेही सो छोडिये,
कोटी बैरी राम, जद्यपि परम सनेही।"

जिसके जीवनमें सीताराम भगवान के प्रति प्रेम या भक्त में स्नेह हो तो भले उसके करोडो प्रेम करने वाले हो तो भी उन्हें शत्रु समझकर त्याग देना चाहिये। भले ही लोक प्रतिष्ठित हो, रुपवान हो धनवान हो, गुणवान हो, विद्यावान हो, कुलवान हो, लेकिन भगवान की पहचान न हो तो उसका परित्याग कर देना चाहिये। प्रभु पद में प्रीति न हो तो उसका परित्याग कर देना चाहिये। प्रभु पद में प्रीति न हो तो वह अंधा है। हरिदर्शन में उत्सुक न हो तो पत्थर के समान है। जन्म जन्मानतर का पुण्य उदित होने पर ही भगवान तथा भगवान के भक्त मे मोह होता है। सामाजिक या कौटुम्बिक कुसंग में अपना राम रतन कहीं खोनजाय इसी को बताने के लिये कवि भक्तो को सतर्क कर रहे हैं। लोकेषणा, पुत्रेषणा, वित्तेषणा में समाज फंसा हुआ है। उससे बाहर निकलने का कार्य मात्र भक्त ही कर सकता है अन्य समाज के लोग फंसाने का ही कार्य करते हैं। प्रभु पद प्राप्त कराने में संत परम हितकारी होते हैं। अन्य सभी दुःख देने वाले हैं।

"तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषण बंधु,
भरत महतारी।
बली गुरु तज्यो केत व्रज बनी तनी,
भये मुद मंगलकारी॥"

भगवान भक्तों की समझ नीयम, निश्चय, पक्ष पर टिकी रहती है। भगवत स्वरुप में निश्चय हो तो विपरीत पक्ष में भी उसे कोई डिगा नहीं सकता। भगवान के तथा भगवान के भक्त के कार्य में मस्तक कट जाय तो भी कोई वात नहीं। बहुत सारे ऐतिहासिक उदाहरण ऐसे हैं जिस में भक्त प्रहलाद बहुत छोटी उम्र में ही जो पिता सत्ता पर आरुढ थे फिर भी भगवान से विमुख होने के कारण नाना विधपिता द्वारा यातना भोगने पर भी प्रहलादजी उनकी आज्ञाओं की अवहेलना करके यातना सहते रहे। इसी तरह लंकेश रावण भी भगवान श्रीराम तथा अंतेवासिनी परम भगवती माता सीताजी के अपराधमें फंसे होने के कारण लधु भ्राता विभीषण ने भी रावण को बहुत समझाने पर भाई का पक्ष त्याग दिये थे और प्रभु की शरणागति स्वीकार लिये थे। इसी तरह भरतजीने भी माता कैकेयी जैसी सगी माता का त्याग करके भगवान की शरणागति स्वीकार की थी। बलीराजा ने भी भगवत् भक्ति में अंतराय करने वाले गुरु शुक्राचार्य के वचन को न स्वीकार कर प्रभु के वचन को स्वीकार करके पाताल लोक में चले गये थे। इसी तरह गोपियां भी पतियों को छोड़कर हरि की वांसुरी की आवाज सुनकर शाश्वत सुख के लिये दौड़ पड़ी थी। जो भी प्रभु ऊपर न्यौछावर किये वे दुःख से रहित होकर अखंड सुख को भोगने वाले हुये।

जिनके जीवन में एकमात्र भगवान का आश्रय है जिनके जीवन में प्रेम का प्रवाह बह गया है, उनके जीवन में आत्मीय भाव सदा बना रहता है। तुच्छ इस संसार के बंधन को छोड़कर जो अमर सुख के लिये श्रीहरि की शरणागति स्वीकार करते हैं वे अनंत सुख को प्राप्त करते हैं। ऐसे भक्त को कोई दान, पुण्य, व्रत, तप, जप तीर्थ में जाने की जरुरत नहीं है, वह मृत्यु लोक में रहते हुये भी भगवत सानिध्य के सुख का अनुभव करता है। अधिक

क्या कहें जिसे प्रभु की भक्ति का रसास्वाद नहीं मिला उसे इसका अनुभव क्या होगा ? उलूक को सूर्य के प्रकाश से क्या प्रयोजन ? भक्त कवि नरसैया ने भी यही कहा है कि ''हेत विना हुकारो नो देवो जेनुं हरखे शुं हैयुं न दिशे रे'' इसी तरह एक कविता में लिखा है कि ''व्रज वनिता ना प्रेमनी आगण उडया कोटी कबीरा रे'' उद्धवजी के ज्ञान की गहराई के उत्तर में गोपियों ने कहा कि हे उद्धवजी ? हमारे मृत्यु के बाद हड्डी के ऊपर से विजली का तार जायेगा तो भी हमारे मुख से हे कृष्ण, हे कृष्ण ऐसा ही निकलेगा कारण यह कि हमारे रोम रोम में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम समाया हुआ है।

''तुलसी से सब भाती परम हती, पूज्य प्रात नो प्यारो।
जा सो होय स्नेह रामपद, ये तो मतो हमारो ॥''

तुलसीदासजी अपनी कुशाग्र बुद्धि से संसार के विषय में लिखते हैं कि ''राम से अधिक राम कर दासा'' इस पद्य से प्रभु के प्रति प्रीति प्रगट होती है। जो भी श्रीहरि में आत्म समर्पण भाव रखे हैं वे सुखी हुये हैं। परमहंस स्थिति को प्राप्त करने वाले संत प्रभु के चरित्र का स्मरण करके आनंद का अनुभव करते रहते हैं। सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण का जिसने आश्रय लिया वह यहाँ सभी प्रकार के सुख को तो भोग ही रहा है अंत में स्वयं अपने धाम का भी सुख देते हैं, लेकिन आत्म समर्पण का भाव आवश्यक है। मुक्तानंद, प्रेमानंद इत्यादि कवियों की कविता से प्रभु के प्रेम की भावना सर्वत्र प्रगट होती रहती हैं। ऐसे प्रभु के चरणों में कोटि-कोटि वंदना।

पेज नं. ४ से आगे

रुपया हम कैसे ले आयेंगे। यह सुनकर बडा भाईने कहा तुम कोई दान पुण्य नहीं करता सभी रुपये पैसे एकत्रित किया है, तो यह सभी सम्पत्ति तेरे साथ आयेगी क्या ? तुरंत छोटा समझ गया और बड़े भाई की बात मानकर दान पुण्य-परोपकार करने लगा।

इस संसार में जो भी कुछ है वह सब भगवान का है। उन्ही का दिया हुआ है। उसी में से देना है।

एक सज्जन नीचे दृष्टि करके दान देते थे। यह देखकर किसी संत ने कहा कि भाई ऐसा आप क्यों करते हो ? उसने कहा कि -

देत हर कोई और है, हेत रहत दिन रैन।
लोक भरम हम पर धरै, ताते नीचे नैन ॥

हे महापुरुष ! हमें तो संपत्ति भगवानने दी है। मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। दान देता रहता हूँ। परंतु लोग मेरी प्रशंसा करते रहते हैं। यह सुनकर हमें शर्म आती है। इसी लिये दृष्टि नीचे करके दान देता हूँ।

तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र दिये दान।
मन पवित्र हरि भजन से इसविधहो कल्याण ॥

श्री नरनारायणदेव आदिक देवों को ठोर के भोग के विषय में

समस्त सत्संग को सर्हष ज्ञात हो कि अपने संप्रदाय में वैष्णव संप्रदाय के श्री विठ्ठलनाथजी की परंपरा से ठाकुरजी को "ठोर" का भोग लगे ऐसी सभी भक्तों की इच्छा थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को इस विषय में प्रार्थना की गयी, जिससे प.पू. महाराजश्रीने इस विषय में आज्ञा देदी। अब ठाकुरजी के राजभोग में "ठोर" का भोग लगाया जायेगा। एक दिन पूर्व इसे दर्ज कराना होगा। १५००/- रुपये में "ठोर" का भोग होगा।

पेशवा सरकार जाने के बाद सहजानंद स्वामी अहमदाबाद में पुनः पधारे

– चेतन भगत गुरु महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी

ई.स. १८१८ विठ्ठलराम बाबाजी के नाम से पेशवा सूबी अहमदाबाद का हाकिम था। वह सदा खुशानंद खोर तथा जीहजूरियों से घिरा रहता था। १८१६ में सहजानंद स्वामी संतवृंद, पार्षद तथा सशस्त्रधारी दरबारों के साथ शहर में पधारे। किसीने पेशवा का कान भर दिया कि यह सहजानंद तथा उसके संत पाखंडी हैं। आपकी राज सत्ता के लिये खतरा रुप हैं। यह सुनकर पेशवा ने सहजरिंद स्वामी तथा संतो का अहित करने की भावना से भद्र किला में पधारने का आमंत्रण दिया। वहाँ उन्हें ऊंचे आसन पर बैठने का आग्रह किया, लेकिन सहजानंद स्वामी उस पर नहीं बैठे। उन्होंने कहा कि हम साधु है, हमें आप जैसे राज सत्तावालों से ऊँचे आसन पर नहीं बैठना चाहिये। बिदाई लेने के समय स्वामी ने अपनी छड़ी से गद्दी को दबाया तो गद्दी नीचे चली गयी और नीचे तेल का कूंआ दिखाई दिया। पेशवा की चाल खुल गयी जिससे वह क्रोधमें आकर कहा कि आप अभी हमारी राज्य सीमा से बाहर चले जाइये। तब सहजानंद स्वामीने कहा कि हम वापस कब आयेंगे ? यह सुनकर पेशवा ने कहा कि हमारा शासन जब तक रहेगा तब तक अहमदाबाद में पग नहीं रखना। बाद में ऐसा हुआ कि पेशवा तथा गायकवाड़ के झगड़ेका लाभ अंग्रेजों ने उठाया। इ.स. १८१८ में अहमदाबाद से पेशवा की सरकार उखड़ गई उसकी जगह पर खेड़ा के कलेक्टर एन्ड्यु डनलपने शहर पर अपना कब्जा कर लिया।

अहमदाबाद में कंपनी का शासन होते ही सहजानंद पुनः पधारे। सं. १८७८ फाल्गुन शुक्ल तृतीया रविवार ता. २०-२-१८२२ को कालुपुर में पाठकवाडी के रुप में प्रसिद्ध स्थान पर सहजानंद स्वामीने अपने हाथों से मूर्तियों की प्रतिष्ठा की।

वह स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रथम शिखरी मंदिर होने का गौरव प्राप्त किया। अहमदाबाद में कंपनी का शासन तथा स्वामिनारायण संप्रदाय का आगमन एक साथ होने से लोगों में लोकोक्ति प्रचलित हुई कि तिलक तथा टोपी दोनो एक साथ आयी। टोपी चली गयी तिलक रह गया। अर्थात् विदेशी शासन गया और लाखों लोगों के कल्याण के मार्गदर्शक संप्रदाय की ध्वजा अभी भी लहरा रही है।

नूतन प्रकाशन

१. श्रीहरि विचरण लीला। २. अष्टांग योग दर्शन (सत्संगी जीवन में से)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से इन दो नूतन पुस्तको का प्रकाशन हुआ है। शा.हरिकेशवदासजी द्वारा संपादित तथा लिखित ये पुस्तक सत्संग के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इन दोनो पुस्तको का विमोचन गांधीनगर से-२३ अपने मंदिर के तीसवे महोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से सभा में हुआ था।

ये दोनों पुस्तक स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर साहित्य केन्द्र तथा सेक्टर-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से मिलेंगी।

हितकारी श्रीहरि प्रेम में बंधाये

प्रो. महादेव धोरीयाणी (राजकोट)

सामान्य सत्संगी भी अगत्राई के पर्वतभाई से अन भिज्ञ नहीं होगा ! संप्रदाय में राजा जनक तथा आत्म निवेदी अम्बरीष जैसे हरिभक्तों की गिन्ती में पर्वतभाई का नाम आता है । एक दिन अनचक्के में श्रीहरि अगत्राई पहुंच गये । वहाँ पर्वतभाई से कहने लगे कि हमें विमार होना है आप हाँ कहोंगे कि ना ?''

पर्वतभाई महाराज को दंडवत् करते हुये कहे कि नहीं महाराज आप विमार मत होईये । आप अगत्राई में रहिये और अहर्निश हमें सेवा का लाभ दीजिये । बिमारी में सेवा के लिये दृढ बल बना रहे ऐसा कीजिये ।

पर्वतभाई के विशेष आग्रह पर महाराज वहाँ दो दिन रहे । महाराजकी यह बात सुनकर पर्वतभाई को थोड़ा अन्दाज तो हुआ । महाराज वहाँ से पंचाला पधारे । दरबार झीणाभाई महाराज के लिये सुंदर आराम की व्यवस्था करें कि उससे पहले महाराज ने प्रश्न किया कि यदि मैं विमार होजाऊँ तो ?

झीणाभाई यह शब्द सुनकर अवाक रह गये, अरे ! यह क्या ? वे मन ही मन विचार करने लगे कि विशालकाय बटवृक्ष एकाएक उखड़ कर जमीन दोस्त होजाय, या सूख जाय, इस तरह की बात महाराज कह रहे हैं ।

झीणाभाई गद्दे पर चादर पिछाते हुये मन में विचार करने लगे कि महाराज की ऐश्वर्य लीला अपरंपार है । झीणाभाई भाव में आकर अपने आखों के आंसू पोछ रहे थे, महाराज उस भाव को पहचान गये ।

महाराज कुछ कहे नही, मात्र एकदिन रुक कर प्रातः उठते ही निकल पड़े । झीणाभाई के मन में हुआ कि मौत तथा मेहमान अपनी इच्छा से आते हैं और चले जाते हैं, रुकते नहीं ।

महाराज का वह शब्द झीणाभाई के हृदय कुरेदने लगा ।

अरे यह मैंने क्या किया ? महाराज के लिये हमने कभी किसी बात के लिये ना नहीं किया । पंचाला में महाराज बिमार हुये यह झीणाभाई को सहन नहीं हुआ ।

महाराज तीसरा मुकाम पिपलाणा किये । वहाँ भी विमार होने की बात किये तो कोई भी सत्संगी स्वीकार नहीं किया । इसलिये वहाँ भी नहीं रुके गणोद होकर वरजांग जालिया गाँव में आकर केसर मां को मिले । हरिभक्त हीराभाई तथा केसरमां के आनंद की सीमा न रही ।

महाराजने कहा कि हम यहाँ बिमार होना चाहते हैं, आप लोग हाँ करो तो ....?

अत्यंन्त भोलेपन में आकर केसर मां ने हाँ कह दिया । आपकी जैसी इच्छा । महाराज के मन में भी ऐसा ही था और वहीं पर वे विमार हुये । केसरबाई तथा उनके पति हरिभाई श्रीहरि की सेवा में रात दिन लगे रहे ।

बिमारी का उपाय भी स्वयं महाराजने किया । अनशन पर उतर गये । खाना-पीना छोड़ दिये ।

केसर मां महाराजसे पूछीं, महाराज ! आप क्या लेंगे ? जिसमें रुचि हो वह बनाकर दूंगी ।

महाराज बिमार थे फिर भी मजाक करते थे । जो वस्तु गाँव में न मिले वह खाने के लिये मांगते थे ।

एकवार आधी रात में कहे, हमें गरमा गरम जलेबी अभी खाना है । केसर मां हीराभाई को जगाई और महाराज की बात बताई अब दोनो वहाँ से चल दिये, ''लहुवाई का घर खुलवाकर, जलेबी बनवाकर, मेहनताना देकर दोनो घर आकर महाराज को जगाकर कहे कि महाराज यह जलेबी ताजी है, आप इसे ग्रहण करें ।''

महाराज तो इस तरह कितनी बार केसरमां की कसौटी किये । जालिया के पास नदी वहती है, वहाँ से पांच घड़ा पानी लाकर हमें स्नान कराओ तो ही हमारा रोग ठीक होगा । रोग को दूर करने की अलग रीति महाराज ने अपनायी । महाराज का रोग ठीक हो गया । अब प्रतिदिन केसर मां महाराज को अलग-अलग प्रकार के भोजन बनाकर खिलाने लगी ।

''जमतां जमतां रे पानी पीवानी टेव....''

महाराज पानी पीते जांय और मुख में ग्रास डालें । यह देखकर दंपती का मन प्रसन्न होजाता था ।

केसर मां यह देखकर मन में विचार करने लगी कि, ऐसा मेरा बेटा होता तो रोज उसे स्नान कराकर भोजन कराती । इस रहस्य को अन्तर्यामी समझ गये । महाराज इस संकल्प को पूरा करने के लिये दृढ निश्चय कर लिये ।

हितकारी श्रीहरि प्रेम में बंधे हुये थे । करीब ४५ दिन तक महाराज सेवाभावी इन दंपती को सेवा का लाभ दिये थे । ऐसे थे मंगलकारी, प्रीतिकारी तथा हितकारी श्रीहरि ।

रोकडिया हनुमानजी - जीरागढ

- पटेल शंभुभाई हीरजीभाई पटेल (नवावाडज)

श्रीजी महाराज को मूलीधाम बहुत प्रिय था। मूलीधाम में जीरागढ मंदिर आया हुआ है। जीरागढ गांव में प्रतिवर्ष विद्वान संतो द्वारा कथा का सुंदर आयोजन किया जाता है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ (हरिमंदिर) में पटमूर्तियाँ जिस में - घनश्याम महाराज, खड़ी मूर्ति, श्री नरनारायणदेव धर्म भक्तिमाता, माणकी घोड़ी इत्यादि प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ के रोकडिया हनुमानजी की मूर्ति बड़ी चमत्कारीक है। सर्व प्रथम निर्दोषानंद ब्रह्मचारी ने रोकडिया हनुमानजी की प्रतिष्ठा करवायी थी। किसी कारण हनुमानजी के दक्षिण पाद की अंगुली खंडित हो गयी इसलिये पू. निर्दोषानंद स्वामीने कहा कि अब यह मूर्ति खंडित हो गयी है अतः इसकी पूजा ठीक नहीं, अतः विसर्जित करके दूसरी मूर्ति प्रतिष्ठित करनी पड़ेगी। इस मूर्ति को समुद्र में विसर्जित करने के लिये स्वामीने कहदिया। बाद में हरिभक्तों ने यह विचार किया कि विसर्जित न करके समुद्र की रेती में गाड़ देते हैं। यह विचार करके सभी गांव से एक बैल गाड़ी मंगवाकर समुद्र की तरफ चल दिये कुछ दूर ही गये थे कि गाड़ी की एक पहिया टूट गयी। पुनः दूसरी गाड़ी में खंडित मूर्ति रखकर आगे चले कि दूसरी गाड़ी की भी पहिया टूट गयी। इसके बाद पीछे से आती हुई ट्रक को रोककर ड्राईवर से विन्ती किये वह धार्मिक कार्य समझकर लेजाने को तैयार हो गया। अब वह मूर्ति ट्रक के ऊपर लादी गई लेकिन ट्रक आगे की तरफ न जाकर पीछे की तरफ चलने लगी। यह प्रक्रिया बार-बार होती रही। ट्रक ड्राईवर भी परेशान हो गया। वह नीचे उतरकर देखा तो ट्रक में कहीं कोई खराबी नहीं है, फिर ऐसा क्यों हो रहा है। गाँव के हरिभक्त जो मूर्ति के साथ आये थे वे सभी आपस में बात करने लगे कि यह मूर्ति प्रथम जिस गाड़ी में रखे उसकी पहिया टूट गयी, दूसरी की भी वही स्थिति हुई। अब ट्रक में रखी गयी तो ट्रक आगे न जाकर पीछे की तरफ जा रही है, इसका क्या रहस्य हो सकता है, कुछ शंका हो रही है। यह सभी बातें ड्राईवर ने सुन लिया। वह मूर्ति में कुछ रहस्य है ऐसा समझकर ट्रक से नीचे उतरा और सभी से कहा कि आप लोग तुरंत ही इस मूर्ति को नीचे उतारे आपका पैसा हमें नही चाहिये मैं मूर्ति नहीं लेजाऊँगा। बहुत निवेदन के बाद भी वह नहीं माना। जिस किसी तरह से वे लोग मूर्ति को समुद्र तट तक ले गये। समुद्र के किनारे खड्डा खोदे ज्यों गाड़ने के लिये मूर्ति उठाये कि बड़ी तेज आंधी आई जिसमें बालू तथा कंकण उड़कर सभी को चोट पहुंचाने लगे, इसलिये सभी भाग कर अपने गाँव जीरागढ हरि मंदिर मेंआगये। उसी समय रोकडिया हनुमानजी एक हरिभक्त के पैर में लकड़ी मारकर कहने लगे कि तुम सभी हमें गाड़ना चाहते हो, गाड़कर देखो : इसका परिणाम क्या होता है। मैं भले ही खंडित हूँ लेकिन सभी के मनोरथ पूर्ण करने वाला हूँ। यह सुनकर सभी भक्त पुनः उस मूर्ति को लाकर छोटे नंद स्वामी के हाथ से प्रतिष्ठित करवायें। यहाँ जो भी भक्त रोकडिया हनुमानजी की मान्यता रखता है उसे हनुमानजी पूरा करते हैं। ऐसे चमत्कारिक यहाँ के रोकडिया हनुमानजी है।

श्रीहरि के धाम के प्राप्ति का उपाय

- पटेल गोरधनभाई शंकरदास

उद्धवातार स.गु. रामानंद स्वामी के साथ मेघपुर में अमरसंगजी का सत्संग हुआ। प्रथमबार स्वामी के दर्शनार्थ वे गये थे। उस समय स्वामीने धर्म की महिमा तथा जन्म-मरण के दुःख की वात एवं यमपुरी की यातना की बात कही थी। "जो श्रीहरि की भजन नहीं करते तथा सदाचार-धर्म का पालन नहीं करते उन्हें यमराज नरककुंड में लेजाकर डाल देते हैं।" तब अमरसिंह ने कहा कि "हमें तो आपके पास ही रहना है। स्वामीने कहा कि प्रथम तो आपको हुंक्का एवं अफीण पीना बंद करना होगा। यदि आपको मेरे पास रहना हो तो व्यसन से मुक्त होना पड़ेगा। यह सुनते ही सभी त्याग कर एकांतिक भक्त हो गये। उनके पुत्र करसनजी से महाराजने कुरान बुलवाये थे। उनकी पुत्री लाकड़ीबाई को महाराज ने समाधी करायी थी। लाकड़ीबाई समाधी वाली कहलाती थी। एकबार उन्होंने महाराज से कहा था कि लोग जबरदस्ती विवाह करें तो तूं क्या करेगी? तब लाकड़ीबाईने उत्तर दिया था कि तब मैं देहत्याग दूंगी। महाराज ने कहा कि लाकड़ीबाई शरीर धारण करना या त्यागना यह तो भगवान के हाथ में हैं। मेरी इच्छा के बिना कोई एक तिनका भी नहीं तोड़ सकता। तब वह बाई हठयोग से अपने प्राण को खींचने लगी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अंत में उसे ख्याल आया कि मेरा यह दुराग्रह ठीक नहीं है। यह सब तो परमात्मा के अधीन हैं। पूर्णकाम तो परमात्मा होते हैं। सर्वनियन्ता तो वे ही हैं। आत्मा स्वतंत्र नहीं है। स्वतंत्र तो एकमात्र परमात्मा हैं। यह समझ आना आवश्यक है। यह समझ जबतक नहीं आयेगी तब तक अहं कराता रहेगा। समाधिद्वारा यह संभव है। भगवान का भक्त यह समझ लेता है कि अपनी स्वरुप ही आत्मा है। शरीर आत्मा नहीं है। अंतर्यामी स्वरुप में परमात्मा का निरन्तर ध्यान करने से समाधिकी स्थीति आजाने पर ही एकरुपता भासित होती है। वह श्रीहरि की कृपा के बिना संभव हीं नहीं है। जब एकात्म भाव आजाता है वही निर्विकल्प समाधिकहलाती है। वही निर्विकल्प समाधिब्रह्मलोक तक लेजाने में सहायक होती है। इस लिये काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि विकारों का परित्याग करके आत्मचिन्तन करते हुये मैं हरिका दास हूं यह सतत चिन्तन करते रहना चाहिये।"

मनो बुद्धि रहंकार चितानि नाहं -
न च श्रोत्र जिह्वे नच घ्राण नेत्रे।
न च व्योम भूमि र्न तेजो न वायुः
चिदानंद रुपः शिवोऽहम् शिवोऽहम ॥

मैं मन, बुद्धि, अहंकार, या चित्तरुप नहीं, मैं कान, जीभ, नाक, आँख नहीं, मैं आकाश, पृथ्वी, वायु से बनी देह नहीं, मात्र मैं चिदानंद स्वरुप कल्याण कारक आत्मा हूँ।

इन सभी वातों का मर्म समझकर श्रीहरि का प्रियपात्र बनना होतो श्रीहरि की प्रार्थना मात्र केवल वाणी में नहीं बल्कि आचरण में लाना आवश्यक हैं।

निर्विकल्प उत्तम अति निश्चयतव घनश्याम।
माहात्म्यज्ञानयुक्भक्ति तव एकांतिक सुखधाम ॥

श्रीहरि की एकादश नियम पालन की जो आज्ञा है उसका पालन दृढता से करना चाहिये। (१) हिंसा न करवी, जंतु की (२) परत्रिया संग को त्याग (३) मांस न खावत मद्यकुं (४) पीवन नहीं बड़भाग (५) विधवा कुं स्पर्शत नहीं (६) करत न आत्मधात (७) चोरी न करवी काहुकी (८) कलंक न कोईकुं लगात (९) निंदक नहीं कोई देवकुं (१०) बिन खपतो नहिं खात (११) विमुख जीव के वदन से कथा सुनी नहिं जात। श्रीहरि ने भी ग.प्र. वचनामृत में कहा है कि भगवान के स्वरुप में अखंड वृत्ति रखकर जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म के भेद समझकर आत्म तत्व के साथ स्वरुप की पहचान करके "आत्मा को ब्रह्मस्वरुप की प्राप्ति के लिये श्रीहरि की मूर्ति" चिन्तमणी के समान है। इसके चितवन से ब्रह्म स्वरुप की प्राप्ति होती है। सभी मायिक उपाधिसे रहित होकर जीवात्मा पुकारने लगती है।

न पुण्यं न पापं न सौखं न दुःखं -
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता -
चिदानंद रुपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

इस बात का तत्वज्ञान अर्थात् आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन। ब्रह्मानंद स्वामी का श्रीहरि के साथ जब मिलन हुआ उस समय उनके हृदय में नाद उठा "रे सगपण हरिवरनुं साचु" बीजु सर्वे क्षणभंगुर काचुं। रे सौ साथे प्रीति टाड़ी रे, भाग्युं मन मिथ्या भाड़ी छे वरा- जेवा एक वनमाली।"

सत्संग सुरभि

– अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

आप हमारे है न

यहाँ का छोटा गाँव बाला नवोढा की तरह अलंकृति हो रहा है । अनेकों के हृदय को प्रकाशित करने वाला सहजानंदी सूर्य आज सौराष्ट्र की धरती को प्रकाशित कर रहा है । गाँव के हरिभक्तों के आनंद का पार नहीं । जगह-जगह पर पताकायें फहर रही हैं । भले गाँव के घर मिट्टी के हैं फिर भी साफ-सुथरे श्रीजी महाराज के स्वागत में आतुर हो रहे हैं ।

प्रातः नव बजे महाराज की पधरामणी हुई । सारा गाँव महाराज के स्वागतार्थ गाँव से बाहर आगया था । महाराज के मस्तक पर सुनहरी पगड़ी थी, सुन्दर उत्तरीय वस्त्र एवं अधोवस्त्र की शोभा कुछ अलग ही थी । सुगंधमय वातावरण चारो तरफ हो गया था । सभी लोग ढोल-नगारे के साथ गाजे बाजे से श्रीहरि की शोभायात्रा में सम्मिलित हुये । सभी आनंद के साथ नृत्य कर रहे थे । मारे आज प्रीतम घेर आव्या......

श्रीजी महाराज संत-मंडल के साथ एक भक्त के घर पधारे । महाराज इस भावभीने स्वागत उत्सव से खूब प्रसन्न हुये । उच्च आसन पर बिराजमान हुये । भक्त उनकी पूजा किये । उसमें गाँव की एक वृद्धा माता भी थी । श्रीजी महाराज का प्रथम वार दर्शन कीं थी । देखते ही उनकी आँखे श्रीजी महाराज के मुख कमल को देखने में विलीन हो गयी । निर्निमेष दृष्टि से देखती रही । मां क्या विचार कर रहीं है ? महाराज ने पूछा । विचार कर रही हूँ कि कुछ आप को देना है, लेकिन क्या दूं ? महाराज, आप ही कहिये न, आपको क्या दूँ ? माताजी महाराज के ऊपर छोड़ दी, महाराज जो कहेंगे वही दूंगी . महाराज प्रसन्न तो मेरा मन प्रसन्न । अगल बगल बैढे हरिभक्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि महाराज भक्तों को मांगने की बात करें यह तो ठीक लेकिन यह माताजी क्यों मांगने को कहती हैं । आज यह विपरीत जैसी वात लग रही है । महाराज तो अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति है, उन्हें क्या मांगना ? उन्हें क्या कमी ? बस महाराज ! कुछ मांगिये । आप कुछ कहिये तो सही । वह वृद्ध आग्रह करती रही ।

लोग विचार में पड़ गये । अरे ! ये तो ऐसी लग रही है जैसे इसका कोई बड़ा राजपाट हो ।

महाराज पुनः उसकी तरफ देखे । सभी को लगा कि महाराज कुछ कहेंगे ।

"मा आपका विशेष आग्रह देखकर कहता हूँ कि हमारे संत जब बहुत प्रसन्न होते हैं तो जो मांगे वह देते हैं । इसी तरह आप भी खूब प्रसन्न हों तो आपको जो सबसे प्रिय हो वह आप दे दीजिये ।"

"दे दी" ! इतना कहकर घर आयीं । उनको सबसे अधिक उनकी कपिला गाय प्यारी थी, उसके ऊपर हाथ फेरकर कहीं कि यही मैं महाराज को देती हूँ । फिर वे घर में गयीं वहाँ एक पिटारी थी जिसमें सोना-चांदी रखती थी वह भी उन्हें खूब प्यारी थी, कहने लगी यह महाराज को देती हूं । उसी समय उनके दो बेटे थे वे बाहर से आये तुरंत उनके मन में हुआ कि ये दोनो बेटे हमें सबसे अधिक प्यारे हैं इन्हें मैं महाराज को देती हूँ । बेटों ने पूछा मां क्या किसको देती हो । मां दोनो बेटों के मस्तक पर हाथ रख कर कहने लगी, गाँव में श्रीजी महाराज पधारे हैं ।

हमें खबर हैं मां, हम भी उनका दर्शन करने गये थे, बालकों ने बोला ? मां ने कहा बेटा ! मैं उनके दर्शन करने गयी थी और दर्शन करते समय मैंने उनसे कहा कि महाराज मैं आपको क्या दूँ ? तब महाराज ने कहा जो आपको सबसे प्यारा हो उसे आप देदीजिये । तो क्या तुम्हें

(अनुसंधान नं. १४ पर)

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सहजानंद कैसे हों ?

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

मित्रों ! हम सत्संगी है । स्वामिनारायण भगवान के सत्संगी है । उनका बल रखना है । उन्हीं की शरणागति रखनी है । उत्तरगुजरात में एक भाई को सरकार में मंत्री पद मिला । वे सत्संगी थे । उनका परिवार प्रतिदिन मंदिर जाता था । वे सभी दूसरे दिन से मंदिर आना बंद हो गये । कोई साधु उनसे पूछा कि मंदिर क्यों नही आते । वे बताये कि हमें शर्म आती है । अब मंत्री हो गये स्कूटर पर मंदिर आयेंगे क्या ? अब तो सरकारी गाड़ी में बैठकर आयेंगे । जब किसी को मंत्री पद मिलजाने पर यह भाव आसकता है तो क्या हम स्वामिनारायण भगवान के साथ जुड़े हैं । ''हथेवाड़ो हरि संगाथे में कीधो'' तो ऐसा करंट अपने में क्यों न आवे । सत्संगी में तीन वृत्ति नहीं होनी चाहिए । वह तीन वृत्ति जानने योग्य है । अपने संत कई बार दृष्टांत देते हैं कि एक मदारी वरसात में एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहा था । उस मदारी के पास तीन प्राणी थे । एख सर्प था, दूसरा बन्दर था, तीसरा बकरा था । रास्ते में नदी आयी । नदी में पानी था । मदारी के मन में था कि हम इन तीनों को नदी पार ले जायें । सर्प की विटारी माथे पर रखा, कन्धे पर बंदर को रखा, बगल में बकरे को दबाया, इस तरह तीनों को लेकर नदी में कूद गया । मदारी को तैरने आता था लेकिन बंदर स्वभाव वस कूदे बिना रहा नहीं । बन्दर को पकड़ने गया तो पेटारी में से सांप बाहर निकल आया । उसे पकड़ने गया तो बकरा कांख के नीचे से सरक गया इस तरह तीनो के बचाने में तीनो डूब गये । यह तो दृष्टांत है । अब इसका सिद्धांत समझने लायक है।

सर्प, बन्दर तथा बकरा ये तीनो वृत्ति हैं । जीव में फुंफकारने की वृत्ति सर्प वृत्ति है । अस्थिरि मनोवृत्ति बन्दर की मनोवृत्ति है । निर्माल्य वृत्ति बकरे की है । फुफ़कारने की वृत्ति अच्छी नहीं है । स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि ये संत तथा सत्संगी हमें बहुत प्रिय है । सभी एक साथ हैं । अलग होना चाहते हैं फिर भी अलग नहीं हो पाते । हमें यहां तथा परलोक में एक साथ रहना है । अपने संत कहते हैं कि सर्प वृत्ति अर्थात् अहंकार कहलायेगा । बात बात में फुफकारना भगवान के भक्तों को शोभा नहीं देता । भक्त तो दूसरे को भजन करते देखते हैं तो प्रसन्न होते हैं । कोई आगे बढजाय तो सहन करना चाहिये । अपने ही है कोई पराये नहीं है । यह भाव सदा रहेगा तो ईर्ष्या का भाव नहीं आयेगा । बालक को थपोड़ी कौन मारता है खबर है ? केवल मां ही मारती है । दूसरी महिला मारे तो झगड़ा हो जायेगा । इसी तरह अपने यहाँ जिसमें हितभावना होगी चाहे वे संत हो या भगत हो वैसा कहेंगे । संत, आत्मीय बड़ेजन, भक्तों की वात जो सहन करें उसी में से अहंकार जाता है । दूसरी अस्थिरवृत्ति, स्वामी तकलीफ है, क्या करुं ? तब स्वामी कहते हैं कि प्रतिदिन ११ माला फेरना, लेकिन वह सप्ताह के बाद आता है । ११ माला फेरने पर भी फेर नहीं पड़ा । अरे भाई, थोड़ी शांति तो रखो । बोते ही क्या आम्र फल आ जाता है ? थोड़ा धैर्य रखो । प्रथम प्रयत्न करना चाहिये । बाद में प्रार्थना करनी चाहिये । फिर प्रतीक्षा करनी चाहिये तब कहीं फल प्राप्त होता है । मनुष्य की मनोवृत्ति इतनी अस्थिर है कि न कहो । एक भाई बड़ा दुःखी था पेट में चूंक आती रहती थी । वह वैद्य के पास गया । दो खोराक दवा खाने पर भी नहीं मिटी । डोक्टरके पास गया वहाँ दो इंजिक्शन लगवाने पर भी दर्द नहीं गयी । पुनः तीसरे के पास गया वहाँ भी नहीं दर्द गयी । अंत में सोखा-ओझा के पास गया । वहाँ

भी नही मिटी । इसे अस्थिर मनोवृत्ति कही जायेगी । इसकी अपेक्षा कोई भी एक दवा स्थायी चालू रखा होता तो दर्द खत्म हो गयी होती । बदल-बदल नहीं करना चाहिये । इसी तरह भगवान में तथा संत में बदलने की भावना हो तो उसका नाश होता है।

इसके अलांवा तीसरी निर्माल्य वृत्ति जो भगवान के भक्त को शोभती नहीं है । भजन, भक्ति, कथा कहीं भी उत्साह न हो । जो चाहे वह ऐसी वृत्ति वाले को खींच लेता है। जिस तरह बकरे के कान को पकड़कर जो चाहे वह खींच कर लेजा सकता है । लेकिन सिंह को छू सकता है क्या ? इसी तरह निर्माल्य वृत्ति वाले को कोई भी जहाँ चाहे वहाँ लेजा सकता है । लेकिन जो सिंह पुरुष है उन्हें कोई कहीं नही लेजा सकता । स्वामिनारायण भगवान की सर्वोपरि उपासना जिस में हो उसमें से निर्माल्य वृत्ति चली जाती है। उनमें शौर्य आजाता हैं, सहजानंद सिंह बनजाता है।

यह सतत ध्यान रखना चाहिये कि हम भगवान के भक्त हैं इसलिये ऊपर की तीनो प्रकार की मनोवृत्ति छोड़कर शूरवीर होकर भगवान की एक निष्ठा से भजन करनी चाहिये ।

•

धन्य है विश्वास को

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

मित्रो ! क्या जिन्दगी मात्र श्वांस से चलती है ? आप कहेंगे कि हाँ । श्वास बंद हो तो जिंदगी पूर्ण हो जाय । लेकिन ऐसा नहीं । मात्र श्वास ही जीवन नहीं है । यह अधूरा जीवन है। जिंदगी मात्र श्वास से ही नहीं चलती । जिंदगी को चलाने के लिये विश्वास की आवश्यकता है । आपको विश्वास न हो तो यह दृष्टांत देखिये -

एक जंगल में आश्रम था । आश्रम में एक महात्मा जी रहते थे । महात्माजी के साथ सौ जितने शिष्य थे । ये सभी शिष्य अपने गुरु की सेवा चाकरी करते थे। वेदवेदांत का रहस्य सीखते थे । गाय चराते । गोबर उठाते । आश्रम के सभी काम करते । आश्रम को गोबर से लीपते थे । शिष्य सभी एक समान तो होते नहीं । लेकिन गुरु का प्रभाव ऐसा था कि सभी एक दूसरे की इज्जत करते थे । सभी शिष्य ऐसा मानते थे कि हमारे मार्गद्रष्टा गुरुजी यदि नाराज होजांय तो हमारा कौन ? ऐसी पवित्र भावना ही एकता तथा शांति का मूल है । वे महात्माजी भी सरल चित्त, शांत स्वभाववाले तथा धैर्य की मूर्ति थे ।

एक दिन गुरुजीने एक शिष्य को साथ लेकर यात्रा के लिये निकल पड़े । शिष्य अपने गुरु की खूब सेवा करते थे । गुरुजी सोजांय तो पैर दबाता, पंखा झनता । एक दिन गुरुजी वृक्ष के नीचे सो रहे थे। बगल में उनका शिष्य भी सो रहा था। उसी समय उसी वृक्ष में से एक सर्प निकला । गुरुजी अचानक जग गये । उनकी नजर पड़ी । अरे रे, सांप ? इधर ही आ रहा है । वे हाथ में एक डंडा लिये, लकड़ी को जोर से पटके, लेकिन वह भी कोई सामान्य नहीं था । पूर्व का वासनिक था । मनुष्य की आवाज में बोलने लगा । मुझे रोकना नहीं । मुझे बदला लेना है । गुरुने पूछा किससे ? आप के इस शिष्य से । मेरा यह पूर्व का वैरी है । गुरुजीने कहा, वैर की भावना तो रक्त के साथ होती है । तूं इसे काटेगा तो यह मर जायेगा । तुम इसे क्यों काटना चाहते हो । मैं तुम्हे शिष्य का खून देता हूँ। सर्प ने कहा हमें गले का खून-चाहिये तभी वैर भाव मिटेगा । गुरुने कहा, खून देखकर तूं चला जायेगा न ? वासनिक सर्प ने हाँ कह दिया । गुरुजी अपने थैले में से एक छुरी निकाले और छुरी लेकर शिष्य की छाती पर बैठ गये । जरा मन से कल्पना तो करो । "ऐसा देखकर आप की क्या स्थिति होगी । लेकिन वह शिष्य भी बड़ा अलौकिक था । थोडा आंख खोल कर देखा, मेरे गुरुजी मेरी छाती पर बैठे हैं । कोई भय नहीं, मन में कोई संकल्प, विकल्प नहीं । पुनः स्थिर मन से खराटे की नींद लेने लगा । लेकिन अब ? गुरुजी शिष्य के गले में छेद किये । शिष्य को थोड़ी पीड़ी अवश्य हुई, लेकिन आंख नहीं खोला। गुरुजी विचार करने लगे । शिष्य कितना विश्वास वाला है । खून

गले में से बहने लगा । एक पत्ते पर लेकर सर्प को बताये सर्प की वैर भावना तृप्त हुई वह चला गया ।

गुरुजी तुरंत झोली में से हल्दी निकालकर घाव पर भर दिय, खून रुक गया । शिष्य की घाव भी भर गयी । गुरुजी शिष्य को साथ लेकर आगे चले । शिष्य के मुख बिम्ब पर शंका या भय नहीं था । बल्कि प्रसन्नता थी । जब किगुरु के मुख पर बैचेनी तथा व्याकुलता थी । गुरु विचार करते हैं कि कहीं शिष्य ऐसा पूछे कि मेरी छाती पर क्यों बैठे थे ? मेरे गले में से खून क्यों निकाले थे ? लेकिन यह तो कुछ पूछता ही नहीं है ।''

गुरुजी से रहा नहीं गया और वे स्वयं कहने लगे कि बेटा मैं तुम्हारी छाती पर चाकू लेकर बैठा और गले से खून भी निकाला, क्या तुम्हे भय नहीं लगा । जब कि तूं आंख खोलकर देखे भी थे । तुम्हारे मन में अभी भी वह विचार नहीं आ रहा है । शिष्य ने कहा, गुरुजी ? आज तक आप ही मेरी चिन्ता करते रहे हैं । हमारे सुख की चिन्ता करते रहे हैं । आप जो भी किये होंगे वह मेरे लिये किये होंगे । बाद में गुरुजीने कहा बेटा, तुम्हें सर्प काटने आया था । पूर्व जन्म का बदला लेने के लिये आया था, लेकिन उसे समझाकर सर्प दंश से तुम्हे जीवन दान दिया । यह बात सुनकर शिष्य को आश्चर्य हुआ और गुरु में विश्वास एवं श्रद्धा की भावना बढ गयी । इसके साथ ही गुरुकी प्रसन्नता भी मिली ।

मित्रों ! अब कहो जिन्दगी श्वांस से चलती है कि विश्वास से ? विश्वास से न !!! तो अब से हम सभी अपने इष्टदेव में तथा गुरु में पूर्ण विश्वास करेंगे तो अवश्य सुखी होंगे । इसी लिये तो भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में कहा है कि चार प्रकार के भक्तों को मृत्यु का भय नहीं होता । उसमें भी विश्वासु भक्त की मृत्युभयं टल जात है ।

अपने संप्रदाय में ऐसे तो अनेकों भक्त हो चुके है, जिनका जीवन भगवान स्वामिनारायण के विश्वास में था ।

पेज नं. ११ से आगे

सबसे अधिक प्रिय हैं । मुझे अधिक प्रिय तुम दोनो हो ?

बेटों ने कहा तो देदो ? महाराज हमें साधु नहीं बनायेगे, वे हम सभी को अपनी सेवा में रखेंगे, यही हम सभी की सौभाग्य है ।

बेटों का त्वरित समर्पण भाव देखकर वृद्धा माता की आखो में संतोष के तथा आनंद के हर्षाश्रु भर गये ।

उसी समय दोनो बेटों की अंगुली पकड़कर उन्हें अपने साथ लेकर महाराज के पास ले गयीं । अभी वही बात चल रही थी कि वृद्धा मां पहुंचकर महाराज से बोली लीजिए महाराज ! हमारे सबसे अधिक प्रिय ये दोनो बेटे हैं, इन्हे आपको सौंपते हैं । सम्पूर्ण सभा स्तब्धहो गयी । जिस वृद्धा को हम पागल समझते थे वह क्या देरही है ? बेटों को देने के बाद इस वृद्धा का क्या होगा ? सभी आश्चर्य से उस वृद्धा को तथा उसकी त्याग वृत्ति को देख रहे थे । महाराज मुस्कराते हुये कहे, माताजी आप दोनो बेटों को दे दीं अब आप का कौन ?

माताजीने तुरंत उत्तर दिया कि मेरे तो आप ! आप हैं न ? मैं नुकशान का धंधा नहीं करती ?

श्रीहरि उस वृद्धा की भक्ति पर न्यौछावर हो गये । वृद्धा अवस्था में इतना बड़ा त्याग । महाराज का मुख बिम्ब आनंदित हो उठा ।

महाराज बोले ठीक कह रही हैं मा-आप, हमारा भक्त मेरी ऊपर श्रद्धा रखकर कभी नुक्शान का धंधा नहीं करता । जिस तरह हम सर्वोपरि है वैसे ही मेरे भक्त भी सर्वोपरि है । धन्य है मां आप ?

श्रीजी महाराज दोनो बेटों को स्वीकार किये । बेटे साधु बनकर महाराज की सेवा में सदा रहे । श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का भविष्य उज्ज्वल बना । इस में माताओं का त्याग तथा हरि भक्तों की निष्ठा मूल कारण है ।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से अति दुर्लभ मनुष्य जीवन की सार्थकता

- कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

आज जगत में देखें तो मनुष्य अपने जीवन का कितना दुरुपयोग कर रहा है। यह मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। क्योंकि चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद अनेकों बार गर्भवास के दुःख को सहन करके मनुष्य जन्म को प्राप्त किया है। गर्भवास का दुःख कैसा है ? तो शास्त्र में लिखा है कि सभी नरकों के भीतर कुंभीपाक नामक नरक सभी से घोर नरक कहा जाता है। कुंभीपाक नामक नरक भी भयंकर गर्भवास का दुःख शास्त्रों में वर्णित है। गर्भ में से मुक्ति कब होती है ? जीव जब गर्भ में आता है तब उसे पूर्व के जन्म का ज्ञान होता है। तब उसे ख्याल आता है कि जब मैं इससे पूर्व गर्भ में था। उस समय भगवान की प्रार्थना करके यह निवेदन क्रिया कि प्रभु इस बार आप इस गर्भ की यातना से मुक्त कर दीजिये बाद में मैं आपके चरणों का दास बनजाऊँगा। परंतु इस संसार में आकर जीव सब कुछ भूल जाता है। संसार के मौजमस्ती में डूबजाता है। इस तरह परमात्मा अनेकों बार अवसर देते हैं। लेकिन मनुष्य उस अवसर को प्राप्त करके भी विषयजाल में फस कर भूल जाता है।

स्वयं का कल्याण नहीं कर पाता। इस दुर्लभ मनुष्य जीवन की सार्थकता किसमें हैं ? तो इस के अनुसंधान में प.पू. गादीवालाजीने बताया कि जैसे कोई चित्रकार चित्र बनाने में इतना मशगुल होता है कि जब उसे हम देखें तो यह लगेगा कि उसे भूख-प्यास, गर्मी, ठन्ढी का आभास तक नही रहता है। एक ध्यान से वह मात्र काम ही करता रहता है। जिसका परिणाम यह होता है कि चित्र को जीवंत कर देता है। तुरंत ही अन्य चित्र में अपना मन पिरोदेता है। परंतु आप अपने जीवन को सार्थक नहीं कर सके तो नहीं चलेगा क्योंकि कितने पुण्य के बाद यह मनुष्य जन्म मिला है। फिर यह मनुष्य जन्म मिलेगा या नहीं, इसका हमें ख्याल नहीं है। पुनः मनुष्य जन्म मिले तो इस सत्संग का योग मिला या नहीं, इसलिये सत्संग के योग के साथ मनुष्य जन्म भी मिला है यह अति कीमती है। इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये। धन की महत्ता किसमें है ? धन की महत्ता सद्उपयोग में हैं. एक धनवान व्यक्ति होता है, उसके पास खुब धन होता है, सोने की ईट होती है, लेकिन वह इतना कंजूस होता है कि अपने व्यवहार के लिये भी पैसे का उपयोग नहीं करता था किसी को व्यवहारार्थ भी नहीं देता था, बल्कि रोज सोने की ईटो वाली पेटारी खोलकर दर्शन करके पुनः उसे बंद कर देता था। उसका बेटा खूब समझदार था, उसके मन में हुआ कि पिताजी के पास बहुत पैसे है लेकिन व्यवहार के लिये भी कंजूसाई से काम करते हैं, यह ठीक नहीं है। इसलिये उस पेटारी में से सोने की ईंटो को निकाल कर उसकी जगह पर पीतल की ईंट रख देता है। उसके पिता को इसका ख्याल नहीं आया। क्योंकि वह मात्र दर्शन करके रख देता था। इसी तरह हमारे जीवन में भी होता रहता है। रोज के दैनिक कर्म को पूर्ण करके संतोष मानते हैं, लेकिन महत्ता दुर्लभता को समझा जा सके। इसके लिये नियमित सत्संग-भजन भक्ति करते रहना है। मनुष्य को ख्याल नहीं होता कि हमारे भीतर काम, क्रोध, लोभ, मोह, इत्यादि अंतःशत्रु विद्यमान है। वे कब आक्रमण करजांय यह पता नहीं। परंतु यदि हम नियमित सत्संग में रहेंगे तो अंतः शत्रु को रोक सकते हैं। अन्यथा उनका उद्वेग बना ही रहेगा। मनुष्य को ऐसा लगता है कि जो कर रहा हूँ वह ठीक है। लेकिन वह यह कभी नहीं सोचता कि सत्संग में रहकर अपने विचारों को समझ सकूं. सत्संग में सदा रहने वाला मनुष्य अपने स्वरुप को पहचान सकता है। सत्संग में रहने से मनुष्य के भीतर का अहंकार खत्म हो जाता है। उसके भीतर के दोष दिखाई देने लगें है। यगि कोई व्यक्ति अपने दोषों को दूर करने की भावना से इस सत्संग में आवे तो निश्चित ही वह आगे बढ सकता है।

उसे चाहिये कि सत्संग में बैठकर देखना चाहिये कि मैं सत्संग करने से पूर्व कैसा था और अब क्या हूँ ? अपने अन्तःकरण में जन्मजन्मान्तर का बहुत सारा दोष भरा पड़ा है । तथा सूक्ष्म अनंत आवरण भी है, जब व्यक्ति सत्संग करने लगता है तो ये सभी धीरे-धीरे नष्ट होने लगते हैं । इस वात को स्पष्ट करने के लिये श्रीजी महाराज वचनामृत में खगोल-भूगलो के प्रकरण में कहे कि भरत खंड के सभी मनुष्य यदि मोक्ष के लिये उपाय करें तो मोक्ष सरलता से प्राप्त हो सकता है । यदि प्रयास नहीं करे तो अशक्य है । इसलिये मोक्ष प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

•

दरबार गढ में निंब वृक्ष

- सां.यो. अल्पाबहन शिल्पाबहन गढडा (स्वामि.)

भगवान श्री स्वामिनारायणने दादा खाचर के दरबार में निंब वृक्ष के नीचे बैठकर सभी को वचनामृत का रसपान कराया था । उस निंब वृक्ष का इतिहास संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत करते हैं । स.गु. रामानंद स्वामी के गुरु आत्मानंद स्वामी तथा उनके शिष्य जुक्तानंद, मुक्तानंद क्षेम स्वामी, दरबाई तथा बालबाई घूमते हुए सरदार पधारे । गाँव के मुमुक्षु जीवात्माओं को ज्ञानोपदेश के साथ भक्ति भजन करते हुये सुख पूर्वक रह रहे थे।

वहाँ एक विठ्ठल नाम का गरीब ब्राह्मण रहता था उसकी पत्नी अपने छोटे दुधमुहें बालको को छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हो गयी । इसलिये वह बहुत दुःखी होकर आत्मानंद स्वामी के पास आकर सत्संग करता था।

एक दिन आत्मानंद स्वामी उसे उदास देखकर पूछे कि हे भूदेव ! आप बड़े चिन्तित दिखाई देते हो ? उस समय ब्राह्मण देवता ने दुःख की बात को स्वामी से बताई कि स्वामी मेरा छोटा सा बालक है, दुधमुहे उस बालक की मां मर गयी है, अब उस बालक को दूधपिलाने के लिये किसी अन्य महिला के पास जाना पड़ता है । स्वामीने कहा उस बालक को यहाँ ले आइये । ब्राह्मण देवता उस बालक को लाकर स्वामी की गोंद में रख दिया वह बालक खूब रोने लगा । स्वामीने ब्राह्मण से कहा इसे आप स्वयं अपना स्तनपान कराइये । ब्राह्मण नाराज होकर कहने लगे आप एक अच्छे संत होकर मेरी हंसी उड़ा रहे हैं । स्वामीने कहा मैं आपकी हंसी नहीं उड़ा रहा हूँ, बल्कि जिसतरह इस बालक की मां स्नेह से इसे दूधपिलाती थी, उसी तरह आप भी स्नेह से इसे दूधपिलायें तो अवश्य आप में से दूधनिकलेगा । स्वामी के वचन में विश्वास रखकर ब्राह्मण अपने बेटे को दूधपिलाने के लिये छाती में लगाये कि तुरंत ही दूधआने लगा । इस प्रकार आत्मानंद स्वामी का प्रताप देखकर उन्हीं के साथ वह ब्राह्मण अपने वच्चे के साथ चल दिये । बालक बड़ा हुआ तो स्वामीने पिता का नाम विठ्ठलानंद तथा बालक का नाम बालानंद रखकर साधु की दीक्षा देदी ।

एकबार बाबडियावाड़ के उमेज गाँव में विठ्ठलानंद तथा बालानंद आये, वहाँ के बगल के गाँव में एक बगीचे में स्नान करने गये वहाँ केला के नीचे छोटे से निंब वृक्ष को देखकर हंसने लगे । बालानंद उनके हंसने का कारण पूछा, तो विठ्ठलानंदने बताया कि इसी वृक्ष के नीचे स्वयं परमात्मा विराजमान होकर अनंत जीवों का कल्याण करेंगे । इसलिये इस भाग्यशाली वृक्ष को देखकर हंसी आ गयी ।

उसी समय गढडा से एभल खाचर किसी काम से उमेज आये हुये थे, वे भी उसी बगीचे में गये । इन दोनों की यह बात सुन रहे थे। एभलखाचर उन दोनों के पास जाकर निवेदन किये कि मैं इस भाग्यशाली वृक्ष को अपने गढडा के दरबार गढ में लेजाना चाहता हूँ इसलिये उस बगीचे के मालिक पटेलने उस वृक्ष को देदिया और वही नींब वृक्ष लाकर दरबार गढ में लगा दिये, जो वृक्ष बड़ा होकर महाप्रभु श्रीहरि की छाया बना और उसी के नीचे बैठकर नाना प्रकार के उपदेश किये । इस वृक्ष की सेवा स्वयं एभल खाचर अपने बेटे की तरह करते थे । समय वीतते वह वृक्ष विशाल हुआ । उसी वृक्ष के नीचे महाप्रभुने ३६ वर्ष तक वचनामृत का रसपान कराया था ।

वह कौन ?

- तललाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

घनश्याम महाराज को देवदर्शन का, संत समागम का, तथा कथा श्रवण की खूब सौख थी। इतना इस में मशगुल होजाते कि समय का भी ख्याल नहीं रहता। कितनी वार तो रात में बहुत विलम्ब से आते थे।

भक्तिमाता इससे काफी चिंतित रहती थी। कारण यह कि उन दिनों चारो तरफ असुरों से आक्रांत वातावरण था। कभी भी कुछ हो सकता था।

इसलिये वे एकबार घनश्याम महाराज से कहीं कि देखो घनश्याम, अब तुम लेट आओगे तो दरवाजा ही नहीं खोलूंगी।

घनश्याम कुछ बोले ही नहीं, केवल हंसते रहे। भक्तिमाता ने कहा, हंसने की बात नहीं है, सावधान रहने की बात है। घ्रनश्याम महाराजने कहा, हमारे जितना सावधान रहने वाला दूसरा कौन है?

उस दिन घनश्याम महाराज को घर आते समय विलम्ब हो गया। कारण यह कि उस दिन वहाँ पर हिमालय से कोई महात्मा पधारे हुए थे, उन्ही की सेवा में तथा उनसे कथा सुनने में समय कहाँ चला गया, ख्याल ही नहीं रहा। विलम्ब से घनश्याम घर आये। माताजी विना खाये पिये चिंतातुर होकर बैठी थी। बाहर घनश्याम दरवाजा खट्खटाये, अंदर से माता ने कहा कौन? बाहर से बोलें घनश्याम! पुत्र ऊपर गुस्सा था ही लेकिन प्रेम भी उतना। अब उन्हें मजाक सूझा, क्योंकि वे स्वयं विद्वान की बेटी थीं और शास्त्रज्ञ विद्वान पंडित की पत्नी भी। इसलिये वे घनश्याम का अर्थ काला करती हुई कहीं कि यदि आप घनश्याम हैं तो वन में जाकर वरसिये। तब घनश्याम ने कहा, मैं नीलकंठ हूँ, नीलकंठ ? तोआप मंदिर के ऊपर बैठकर मोर की आवाज में फेंकारव करो।

तब घनश्यामने कहा, मैं हरिकृष्ण हूँ, हरिका एक अर्थ सिंह भी होता है, यह सुनकर माताने कहा सिंह तो कभी काला होता ही नहीं।

घनश्याम बोले - में धर्मपुत्र हूँ, धर्म का अर्थ युधिष्ठिर भी होता है, भक्ति माताने कहा भीम के भाई युधिष्ठिर को कोई पुत्र नहीं था। तब घनश्याम ने कहा, मैं भक्तिपुत्र हूँ। भक्तिमाता ने कहा भक्ति के दो पुत्र ज्ञान और वैराग्य है।

घनश्यामने कहा मैं वही हूँ, इस से भी अधिक हूँ तुरंत दरवाजा खुल गया। भक्तिमाता ने बड़े प्रेम से पुत्र को गले से लगा लिया।

"ठाकुरजी की सेवा रीति" पुस्तिका का प्रकाशन

प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प तथा आशीर्वाद से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गोरधनभाई सीतापरा (श्री स्वामिनारायण मासिक के लेखक) द्वारा लिखित ठाकुरजी की सेवा रीति पुस्तिका में सर्वोपरि श्रीजी महाराज ने शि.प. में जो आज्ञा की है उसी के अनुसार वृद्ध संतो का अभिप्राय लेकर तथा ठाकुरजी की सेवा में कार्यरत ब्रह्मचारियों की सलाह लेकर संप्रदाय के भी विठ्ठलनाथजी की सेवा रीति की अद्भुत परंपरा का पुस्तक में वर्णन किया गया है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा है कि अपने मंदिर में ठाकुरजी की पूजा करने वाले पुजारियों को तथा अन्य शिखरी मंदिरों के महंत की यह पुस्तक मंदिर की तरफ से भेंट दीजाय। नूतन पीढी के युवान पुजारियों को यह पुस्तिका मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

- आज्ञा से महंत स्वामी

प्रश्नपेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर

प्र.१ कुंडल की रईबा रामानंद स्वामी के समय से सत्संगी हरिभक्ता थी उनके तीन पुत्र थे उनका क्या नाम था ?.

प्र.२ एक अखंड भगवान में चित्त वृत्ति राखे और दूसरा भगवान की भजन भक्ति, कथा-कीर्तन भी करे दोनों भक्तों में से श्रेष्ठ भक्त कौन ? वचनामृत में यह प्रश्न किसने पूछा था ?

प्र.३ जसदण भोयरा के राजा वाजसुर खाचर को नाजा जोगिया ने कहा आपके राज्य में निर्दयी कानून है, जिससे लोग दुःखी होते हैं, इस सलाह का क्या परिणाम आया ?

प्र.४ "करोड़ो का बिगाड़कर मोक्ष सुधार लेना चाहिये" यह उक्ति कौन बोला था ?

प्र.५ "जुओं आ जग बन्धन नी जेल" यह कीर्तन किसने गाया ?

प्र.६ अन्तःकरण के देव का नाम बताओ ?

प्र.७ "जीव जेम स्वभाव छोड़ता नथी तेम भगवान पण पोताना स्वभाव छोड़ता नथी" यह वाक्य कौन बोला था ?

दिसम्बर मास २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१) जीव के साथ अंतर्यामी स्वतंत्र रुप से रहते हैं तथा कर्मफल को देने वाले ईश्वर जानना, शि.प. १०७। (२) "सखी गोकुल गामना चौक मांरे ।" (३) १. परा, २. यश्यन्ति, ३. मध्यमा, ४. वैखरी । (४) स.गु. ब्र. अडचत्यानंद वर्णी । (५) स.गु. कृष्णानंद स्वामी । (६) स.गु. निष्कुलानंद स्वामी, स.गु. चैतन्यानंद स्वामी । (७) सं. १८९६ अषाढ शुक्ल-

१. शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी - जमीयतपुरा
२. डाभी मफाजी सरदारजी - डांगरवा
३. पटेल कैलास बहन विष्णुभाई - नांदोल
४. पटेल शारदाबहन कांतिभाई - नांदोल
५. पटेल शिल्पाबहन मणीलाल - दहेगांव
६. पटेल माणेकबहन मणीलाल - दहेगांव
७. सां.यो. कोकिलाबा - सुरेन्द्रनगर
८. पटेल कंचनबहन बाबूभाई - रतनपर
९. पटेल विनोदभाई पी. - अहमदाबाद
१०. सां.यो. अल्पाबहन गु. शिल्पाबहन - गडफरु
११. सां.यो. रंजनबा तथा नानी बहन - ओढव
१२. पटेल भक्तिभाई भोलाभाई - राणीप
१३. पटेल गंगाबहन भक्तिभाई - झुलासण
१४. पटेल गीताबहन प्रवीणभाई - राजपुर
१५. पटेल ज्योत्सनाबहन राजूभाई - आनंदपुरा
१६. सां.यो. शिल्पाबा, शितलबा - अहमदाबाद हवेली
१७. सां.यो. रसीलाबा, अस्मिताबा - अहमदाबाद हवेली
१८. सां.यो. रंजनबा, रेखाबा - बालासिनोर
१९. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोड़िया
२०. सां.यो. मंजूबा, भारतीबा - अहमदाबाद हवेली
२१. भावसार वीणाबहन आर. - अहमदाबाद
२२. मोदी अमृतलाल के. - सोजाा
२३. सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई - अहमदाबाद
२४. सोनी वर्षाबहन अरविंदभाई - अहमदाबाद
२५. सोनी अरविंदभाई टी. - अहमदाबाद
२६. भावसार सुमित्राबहन नरेशकुमार - विसनगर
२७. आडोजा माधवजीभाई हरखजीभाई - मोरबी
२८. खंधडिया भावनाबहन कमलेशकुमार - मोरबी
२९. विठ्ठलपरा अमरशीभाई पटेल - नवसारी
३०. पटेल अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
३१. पटेल साकरबहन नटवरलाल - नांदोल
३२. सां.यो. बहने - श्री स्वा.मं. सीतादरवाजा ध्रांगध्रा

सत्संग समाचार

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास धुन महोत्सव

विश्व के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक तथा संप्रदाय का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दिव्य सानिध्य में तथा श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवं बहनों की हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी एवं प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी की शुभ उपस्थिति में इसके साथ ही पूज्य संतो एवं हरिभक्तों की उपस्थिति में ता. १६-१२-०९ से धनुर्मास प्रारंभ होते ही प्रातः ५-०० बड़े से श्री घनश्याम महाराज के समक्ष तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से ५-०० बड़े श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती की जाती है, जिसके दर्शनार्थ हजारों की संख्या में भीड एकत्रित हो जाती है। इतने विशाल भव्य मंदिर के चौक में वाहन समाते नहीं है, इसलिये रीलीफ रोड तक सभी अपने वाहन पार्क करके आते हैं। सम्पूर्ण धुन में सभी आमंत्रण के बिना एकत्रित होते हैं। कड़ाके ठन्ढी में भी जब कि मस्ती का दिन होता है तब भक्त लोग भगवान की भक्ति करके आनन्द प्राप्त करते हैं। प्रातः ५-३० से ६-३० तक सतत भगवान श्री स्वामिनारायण की धून चलती रहती है। अहमदाबाद मंदिर के व्यवहार कुशल महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा पार्षद को. दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन एवं व्यवस्था आयोजन वेमिशाल है। इस वर्ष सम्पूर्ण मास पर्यन्त धून का रिकोर्ड किया गया था। लगभग १२०० जितनी मासिक धून धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के परिवार की तरफ से, संतो की तरफ से हरिभक्तों की तरफ से आत्मीय श्रेय के लिये बड़ी संख्या में दैनिक धून भी ५००० जितने भाविक भक्तों द्वारा की गयी थी।

इस तरह सम्पूर्ण मास पर्यन्त अर्थात् १६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक धुन चली। जिस में प्रसाद वितरण इत्यादि सेवा में दिगम्बर भगत की प्रेरणा से संत मंडल में जे. के. स्वामी, बलदेव स्वामी, ब्र. राजु स्वामी, योगी स्वामी, मुनि स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी, धर्मजीवन स्वाम,ी दिव्यप्रकाश स्वामी, भूषण भगत, चेतन भगत, नन्दकिशोर, तपनभाई, हार्दिक, भीखाभाई, काठियावाड के हरिभक्त धनुर्मास आफिस के घनश्यामसिंह झाला, भरतभाई भावसार, प्रविणभाई पटेल, इत्यादि अनेक हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। धून में मूक सेवा करने वाले हरिभक्तों पर श्रीजी महाराज तथा प.पू. दोनो महाराजश्री एवं संतो की प्रसन्नता प्राप्त हो. ऐसी ही सेवा करके सभी लोग अपने जीवन को कृतार्थ करे ऐसी श्री नरनारायणदेव महाप्रभु के चरणों में प्रार्थना।

– को. जे.के. स्वामी

धर्मकुल की उपस्थिति में अहमदाबाद शहर के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल का स्नेह मिलन (कोटेश्वर गुरुकुल)

ता. २९-१२-०९ रविवार सायंकाल ४-३० से ७-३० तक कोटेश्वर श्री सहजानंद गुरुकुल के विशाल प्रांगण में धर्मकुल की उपस्थिति में अहमदाबाद शहर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (सपरिवार) स्नेहमिलन का आयोजन किया गया था।

इस सत्संग पर पू.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) ने अपने वक्तव्य में बताया कि श्री स्वामिनारायण मासिक का प्रचार प्रसार अधिकाधिक हो इसके लिये सभी को जागृत किया था। इसके साथ ही बालकों में सत्संग के प्रति जागरुक होने पर प्रकाश डाला था। पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) ने तिलक चन्दन की महत्ता पर, पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजीने देव को दिये जाने वाले दशांस-विशांस पर प्रकाश डाला था। इस प्रसंग में अहमदाबाद मंदिर से ब्र. राजेश्वरानंदजी को. जे.के. स्वामी, राजेन्द्रप्रसाद स्वामी, नारायणघाट मंदिर के महंत देव स्वामी, इत्यादि संत पधारे थे। पूरव पटेल तथा गायकवृन्दने सुन्दर कीर्तन का कार्यक्रम किया था। समारंभ के यजमान श्री कौशिकभाई पाटडिया तथा अन्य यजमानों ने धर्मकुल का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने बालको की सभा में तथा युवानो की सभा में दर्शन-आशीर्वाद का लाभ दिया था। पू.

श्री राजाने बालिकाओं को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीने प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजीने बहनों को आशीर्वाद-दर्शन का दिव्य सुख दिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से नारायणघाट मंदिर में शाकोत्सव के अवसर पर एम.पी.-३ केसेट का विमोचन किया गया था। अहमदाबाद मंदिर में नियमित देव की आज्ञानुसार देव को भेंट देने वालों का सन्मान किया गया था। अंत में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा.स्वामीने आभार विधिकी थी। समारंभ का आयोजन तथा सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामी एवं शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने किया था। अंत महाप्रसाद का आयोजन किया गया था।

– गोरधनभाई सीतापरा

जमीयतपुरा गाँव में नूतन श्रीहरि मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से संपन्न

श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित महाप्रसादी भूत जमीयतपुरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से एवं अहमदाबाद मंदिर स्कीम कमेटी के सभ्य श्री दशरथभाई पटेल के मार्गदर्शन तथा हरिभक्तों के आर्थिक सहयोग से संप्रदाय में तथा श्री नरनाराणदेव देश में भव्य मंदिर का निर्माण किया गया है। जिस के पूर्ण होते ही प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था।

प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री विष्णुयाग कथा पारायण, नगरयात्रा इत्यादि का शुभ कार्यक्रम किया गया था। कथापारायण के वक्ता शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी थे। प्रथम दिन जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी मंगल दीपक प्रगट कर कथा का आरंभ करवाये थे। उत्सव दरम्यान प.पू. बड़े महाराजश्रीने समस्त कथा श्रोताजन को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। तथा प.पू. बडी गादीवालजीने पधारकर बहनो को दर्शन-आशीर्वाद का सुख दिया था।

ता. २४-१२-०९ के दिन मूर्तियो की नगरयात्रा जमीयतपुरा गाँव में धूमधाम से निकल कर भक्ति कीर्तन के साथ मंदिर पहुंची थी।

ता. २५-१२-०९ को प्रातः ८-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय भव्य स्वागत किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने नूतन मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेद विधिसे करके विष्णुयाग तथा पारायण की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी। बहनो को आशीर्वाद दर्शन देने के लिये प.पूज्या गादीवालाजी पधारी थी।

सभा में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

महोत्सव में सेवा करने वालें यजमानो का सन्मान प.पू. आचार्य महाराजश्रीके हाथों से किया गया था।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, जेतलपुर के महंत स्वामी, नारायणघाट, कांकरिया, छपैया, सिद्धपुर, मूली, चराडवा, लीमडी, सुरेन्द्रनगर, लालोडा, टोरडा, सोकली, बद्रिनारायण इत्यादि धामों के महंत स्वामी इस प्रसंग पर अपने वक्तव्य दिये थे।

समग्र महोत्सव के आयोजन में शा. माधवजीवनदासजी (माउंट आबु गुरुकुल संचालक) का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने पुष्पहार से संमान किया।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये कहा कि जमीयतपुरा गाँव तो हमारा मातुल पक्ष है ऐसा कहकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस के बाद श्रीप्रकाशभाई आशाभाई पटेलने समस्त गाँव की तरफ से ग्रामजन एवं सेवा भावना वाले अन्य सभी भक्तों का आभार व्यक्त किया था।

– हिंमतभाई कोठारी

गांधीनगर (सेक्टर-२) श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) का दशाब्दी महोत्सव ता. १७-११-०९ से ता. २१-११-०९ तक धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर श्री मद् सत्संगिजीवन पारायण पू. ध्यानी स्वामी के शिष्य शा.स्वा. सत्संगभूषणदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर देवों का पंचामृत से प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अभिषेक किया था। बाद में अन्नकूट की आरती प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी। अलग-अलग धामों से आये हुये संतो का पू. ध्यानी स्वामीने सत्कार किया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री को पू. ध्यानी स्वामी ने पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। समग्र धर्मकुल इस अवसर पर उपस्थित होकर भक्तों के उत्साह में वृद्धि किया था। पू. ध्यानी स्वामी की ८६ वर्ष के अवसर पर पू. महाराजश्री ने उन्हें दीर्धायु की कामना व्यक्त की थी। और यह बताया था कि स्वामी सत्संग के लिये प्रेरणारुप हैं देश-विदेश से आये हुए सत्संगी अलौकिक लाभ लेकर बिदा हुए थे।

– प्रो. सूर्यकान्त भट्ट, भुज

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ९ दिसम्बर से १३ दिसम्बर तक पेथापुर मंदिर में सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण, लक्ष्मीविवाह, सत्संगिजीवन का माहात्म्य इत्यादि आध्यात्मिक कार्यक्रम पू. ध्यानी स्वामी की उपस्थिति में हुआ था।

ता. १०-१२-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से भगवान की मूर्तियों का महाभिषेक-अन्नकूटादि कार्य किये गये थे। सभा में सत्संगिजीवन का पूजन किया गया था। उपस्थित हरि भक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। प्रासंगिक सभा में पू. महाराजश्री ने बताया कि इस उत्सव में संप्रदाय को समझने लायक उपदेश मिले हैं। ८६ वर्ष की अवस्था वाले ध्यानी स्वामी अविरत सत्संग की सेवा कर रहे हैं। इन के आयोजन में कोई कमी रहती ही नहीं है। इनका जीवन सभी के लिये प्रेरणारुप है। इस तरह कहकर आशीर्वाद दिये थे।

शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज की आज्ञाओं पर आधारित ''सत्संगकी महिमा'' नाटक को कणभा गुरुकुल के कोलेज में अभ्यास करने वाले विद्यार्थियोंने खेला था। जिस में व्यसन मुक्ति, आहार शुद्धि तथा सत्संग एवं संतो के माहात्म्य से सम्पृक्त इस नाटक को देखकर सभी खुब प्रसन्न हुये थे।

– प्रो. सूर्यकान्त भट्ट

आन्तरोली मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्रीजी महाराज के प्रसादी वाले आंतरोली गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ संकल्प से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सुभाशीर्वाद से तथा अहमदाबाद के वयोवृद्ध भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से संपन्न हुई।

इस उपलक्ष्य में ता. १८-११-०९ से ता. २२-११-०९ तक श्रीमद् भागवत कथा पारायण मूली के तथा वर्तमान नारायणपुरा मंदिर के महंत श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुआ था।

त्रिदिनात्मक पंचकुंडी महाविष्णुयाग विधिश्री राजूभाई शुक्ल (उमरेठ) ने करायी थी।

महोत्सव का मंगलदीप प्रागट्य प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री तथा स.गु.शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी स्वामी हरिकेशवदासजी, भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी, शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी, स्वा. श्यामचरणदासजी, स्वा. अखिलेश्वरदासजी, स्वा. वासुदेवचरणदासजी इत्यादि संतोने किया था। स्वा. वासुदेचरणदासजीने सभा संचालन किया था।

समग्र मंदिर निर्माण कार्य तथा मूर्ति प्रतिष्ठा कार्य स्वा. धर्मस्वरुपदासजी तथा स्वा. अखिलेश्वरदासजी हरिभक्तों के सहयोग से सम्पन्न किये थे। उत्सव के समय महिलाओं को आशीर्वाद देने के लिये ता. २०-११-०९ को प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। ता. २२-११-०९ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। ता. २२-११-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। समस्त गाँव के हरिभक्त एवं संतोने भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वदर् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी इसके साथ अन्नकूट की आरती की गयी थी। बाद में विष्णुयाग की पूर्णाहुति की गयी थी।

प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने हरिभक्तों को स्मृति भेंट देकर आशीर्वाद दिया था। अलग-

अलग धामों से आये संतो ने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने बंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी को तथा ग्रामजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

सतत पांच दिन तक दोनो समय मेहमानों को तथा गाँव के भक्तों को भोजन कराया गया था । इस प्रसंग पर रसोई में स्वा. बलदेवप्रसाददासजी, स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, स्वा. देवप्रसाददासजी, स्वा. अनिरुद्धचरणदासजी, भोगीलाल भगत, स्वा. विवेकसागरदासजी, स्वा. स्वयंप्रकाशदास, स्वा. सुखनंदनदास, स्वा. सर्वेश्वरदास इत्यादि अनेकों नामी-अनामी संत मंडल तथा गाँव-गाँव से स्वयं सेवक हरिभक्त खड़े पैर सेवा किये थे । - धर्मेन्द्रभाई पटेल

गांधीनगर (सेकटर-२३) श्री स्वामिनारायण मंदिर में त्रिशताब्दी सत्संग अमृत महोत्स संपन्न

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं प.पू. बड़े महाराजश्री की पूर्ण कृपा से तथा पू.शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर में ता. २३-१२-०९ से २७-१२-०९ तक त्रिशताब्दी सत्संग अमृतोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर सत्संग सभा, मूक विधिर सेवा; समर्पण यज्ञ, आरोग्य विषक केम्प, कार्डियो लोजी, डायाबिटिस, वैदिक स्तोत्र के साथ महाभिषेक, त्रिशब्दी तुलाविधि, महाआरती, जन सुखाकारी अमृत यात्रा, सत्संग गोष्ठी श्रीहरि विष्णुयाग, बालको-युवानो द्वारा प्रेरणादायी सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुन्दर आयोजन किया गया था । इसी तरह बहनों द्वारा भी कार्यक्रम किया गया था । ता. २७-१२-०९ रविवार को पूर्णाहुति के प्रसंग पर प्रात: ९-०० बजे भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री आशीर्वाद देकर अलौकिक लाभ दिये थे ।

इस शुभ प्रसंग पर शा.स्वामी द्वारा लिखित "श्रीहरि विचरण लीला तथा अष्टांग योग दर्शन" पुस्तक का विमोचन, प.पू. लालजी महाराजश्रीके वरद् हाथों से हुआ था । इस सभा में उपस्थित संतोने दर्शन-प्रवचन का लाभ दिया था ।

सभी हरिभक्त पांच दिन तक उत्सव में भाग लेकर धन्यता का अनुभव किये थे । अंत में सभी हरिभक्त महाप्रसाद ग्रहण करके त्रिशताब्दी महोत्सव का स्मरण करते हुये विदा हुये थे ।

- रजनीभाई पटेल

श्रीहरि के चरण कमल से पावन वडुं श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दी उत्सव मेरी दृष्टि मे

बडुं - उत्तर गुजरात अन्तर्गत दंढाव्य देश का श्रीजी महाराज के चरणों से पूत ऐसा वडु गाँव जहाँ पर मंदिर का दशाब्दी महोत्सव तथा श्री हनुमानजी मंदरि का पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभाशीर्वाद से ता. २०-११-०९ से २४-११-०९ तक धूमधाम से मनाया गया था । इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण ज्ञानयज्ञ का मंगल आयोजन किया गया था । कथा पारायण के यजमान पटेल भक्तिभाई खोडीदास परिवार की तरफ से सुपुत्र श्री राजूभाई पटेल (प्रेसीडेन्ट-चेरीहील मंदिर अमेरिका) तथा पटेल गौतमभाई (केनेडा) थे । वडनगर के शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी व्यास आसन पर विराजमान होकर कथामृत का रसपान कराये थे ।

इस प्रसंग पर तीन दिन तक श्रीहरि याग का भी आयोजन किया गया था । इसके मुख्य यजमान श्री अमृतभाई पटेल थे । इसके साथ ही एक दिवसीय "श्री मारुति यज्ञ" का भी आयोजन किया गया था । जिसके मुख्य यजमान श्री भोगीलाल पटेल थे । इस मंगल प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा श्री हनुमानजी मंदिर एवं वडु गाँव के राजमार्गो को रोशनी से सजादिया गया था । इस मंगल प्रसंग पर प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुंदर आयोजन किया गया था ।

इस दशाब्दी महोत्सव के प्रसंग पर विविधधामों से अनेक विद्वान संत-महंत पधारकर शुभेच्छा व्यक्त किये थे । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से अपने भावी आचार्य पू. लालजी महाराजश्री भी पधारे थे । जिनका स्वागत पूजन छोटे-छोटे बालकों ने किया था । इस प्रसंग में कथा पारायण के साथ एकादश संहिता पाठ का भी आयोजन किया गया था ।

जिसका लाभ लेकर यजमान परिवार धन्यता का अनुभव किये थे।

इस मंगल प्रसंग पर वडु गाँव की सत्संगी बहनों की भक्ति भाव देखकर अहमदाबाद से प.पू. गादीवालाजी पधारी थी तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारकर आशीर्वाद का लाभ दी थी। दशाब्दी महोत्सव अन्तर्गत अगल बगल के गाँवों डांगरवा, मोखासण, ओला, झुलासण, कलोल, कोठा, पलियड, डीगुंचा, नारोला, बाडपुरी, पानसर इत्यादि गाँवों से अनेक हरिभक्त पधारकर अलभ्य लाभ लिये थे। इस महोत्सव की पूर्णाहुति ता. २४-११-०९ को प्रातः ८-३० बजे अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वडुं गाँव की धरती पर पधारे उस समय गाँव के हजारो हरिभक्त बड़े हर्षोल्लास के साथ स्वागत किये थे। बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा निकाली गयी थी। शोभायात्रा के यजमान श्री डाह्याभाई माधवदास पटेल ने प.पू.आचार्य महाराजश्री का स्वागत पूजन किया था। बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री मंदिर में पधारकर अन्नकूट की आरती उतारे थे। अन्नकूट के यजमान श्री अमृतभाई पटेल तथा श्री ठाकुरजीके अभिषेक के यजमान श्री विष्णुभाई पटेलने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पुष्पहार से पूजन अर्चन किया था। बाद में पू. महाराजश्री बहनों के मंदिर में पधारकर आरती उतारे थे। सभा मंडप में पधारकर पूर्णाहुति की आरती उतारे थे। वहाँ से प.पू. महाराजश्री ब्र. वासुदेवानंदजी द्वारा प्रतिष्ठित श्री हनुमानजी के मंदिर में पूजन-अर्चन किये थे। उसके बाद कथा मंडप में पधारे थे। अंत में ग्रंथ का पूजन करके कथा की पूर्णाहुति किये थे। बाद में महाराजश्री का पूजन-अर्चन श्री नटवरभाई पटेल ने किया था। श्रीहरियाग के सह यजमान श्री कानाभाई पटेल परिवार तथा मारुति यज्ञ के सहयजमान अ.नि. अंबालाल पटेल तथा गांडाभाई पटेल श्री जयंतीभाई पटेल, भरतभाई पटेल तथा ध्वजा के यजमान श्री राजुभाई पटेल श्री गौतमभाई पटेल (यु.एस.ए.) तथा श्री हनुमानजी की ध्वजा के यजमान श्री रमेशभाई पटेल एवं श्री घनश्यामभाई पटेल, श्री अम्बालाल पटेल, श्री जयन्तीभाई पटेल श्री प्रविणभाई पटेल, श्री भीमाभाई पटेल, श्री रेवाभाई तथा अन्य यजमान पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किये थे। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभी सदस्य तथा मंदिर के कोठारी का भी स्वागत पूजन किये थे। पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। श्री अरविंदभाई पटेल परिवार भी पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मंदिर के विद्वान संत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी एवं प्रेमस्वरुपदासजी, महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. गुरुप्रसाददासजी, स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी, स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी, इत्यादि संत महंत पधारकर श्री स्वामिनारायण भगवान के मूल सिद्धांत को समझाये थे।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शुभाशीर्वाद में बताया कि जीवनमें भगवान श्रीहरि के साथ आत्मनिष्ठा रखना ही जीवन की सार्थकता है। अपने इष्ट देव भगवान श्री स्वामिनारायण को हम पहचान सके यही अपनी भाग्य है। वडु देश के सत्संगि विदेश में भी सुखी हैं यह भगवान की असीम कृपा है। आज वडु मंदिर का दशाब्दी महोत्सव आप मनाये, श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव आप मनाये, इस का प्रतिफल श्री नरनारायणदेव महाप्रभु आप सभी को सुखी करें ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

– शा. नारायणवल्लभदासजी, वडनगर

लुणावाडा (पंचमहाल) में नूतनमंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

पंचमहाल जिले के लुणावाडा गाँव में छपैयाधाम सोसायटी में नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर का भव्य निर्माण प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पू. सा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की देखरेख में निर्मित हुआ था। मंदिर पूर्ण होते ही मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण, विष्णुयाग, मूर्तियों की नगरयात्रा धूमधाम के साथ निकाली गयी थी। इस प्रसंग पर प.पू, बड़ेमहाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। बहनो को दर्शन-आशीर्वाद का सुख देने के लिये प.पू.अ.सौ.

गादीवालाजी पधारी थी। अंतिम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। पू. महाराजश्री के वदह हाथों से नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी थी। बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी।

प्रासंगिक सभा में धाम-धाम से संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे। अंत में समस्त गाँव को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद दिये थे। अंतिम दिन गाँव के अगल बगल के हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके जीवन को चरितार्थ किये थे। - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

कालियाणा

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों के) में पौष शुक्ल-११ को सां.यो. बबुबा की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घन्टे की धुन रखी गयी थी। इसी तरह पुरुषों के मंदिर में डायाभाई बूटीया इत्यादि हरिभक्त धुन में आये थे।

- प्रदीप बुटिया

श्री नरनारायणदेव बाल मंदर की धार्मिकयात्रा

प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर बाल मंडल संचालक श्री गोपालभाई मोदी श्री प्रवीणभाई उपाध्याय (बोपल) की प्रेरणा से तथा श्री अमृतभाई पटेल, श्री सुरेन्द्रभाई पटेल (विशावाले) के साथ सहकार ता. ६-१२-०९ को अहमदाबाद तथा बोपल मंदिर के बाल सत्संग का धार्मिक प्रवास रखा गया था। प्रथम श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती का दर्शन करके लक्जरी बस में कांकरिया मंदिर दर्शन करके जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी महाराज का दर्शन करके सभा हुई थी। जिसमें पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी के शिष्य मंडल ने जेतलपुर में अद्‌भुत लीला का सुंदर वर्णन सरल भाषा में किया था। जेतलपुर के मदिर में सभी बालको को प्रसाद खिलाकर वाडी में दर्शन कराकर खेल-कूद का आनंद लेकर बाद में अहमदाबाद वापस आये थे। प्रत्येक बाल मंडल के संचालको को पू. लालजी महाराजश्रीने छोटे-छोटे प्रवास निकालने की आज्ञा दी थी।

- गोरधनभाई सीतापरा

विदेश सत्संग समाचार

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में स्वामी ज्ञानजीवनदासजी के निर्देश में तुलसी विवाह संपन्न किया गया। जिसमें भूदेव पिनाकिन जानी, श्री विशालजानी, श्री पंकज जानी ने विवाह की विधिकरायी थी। स्वामीने तुलसी विवाह का माहात्म्य समझाया था। ७-८- नवम्बर शनिवार-रविवार को बालकों के लिये सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया ता। जिसमें २५ बालकों ने तथा बालिकाओं ने भाग लिया था। ज्ञान स्वामी ने संप्रदाय की परंपरा का सुंदर वर्णन किया था। भगवान की आरती नित्य नियम, पूजा पाठ, तिलक-चंदन, कंठी इत्यादि की समझ करायी गयी थी। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में "सेवा" द्वारा फ्री मेडिकल केम्प में डॉ. रघुवंशी, डॉ. दफतरी, रोहिणी नावलेकर, रक्षा पटेल इत्यादि डॉक्टरों ने निदान करके आवश्यकता के अनुसार दवा भी दिये थे।

- पी. शाह

वोशिंग्टन डी.सी.

१४ वी नम्बर शनिवार सायंकाल ४-३० से ९-३० तक मेरीलेन्ड में पेरिस हाल में सत्संग सभा हुई थी। बाद में भजन-कीर्तन, धून, नित्य नियम, आरती की गयी थी। ह्युस्टन से शा.धर्मकिशोरदासजीने सेलफोन के माध्यम से श्रीहरि की सर्वोपरि उपासना तथा धर्मवंशी आचार्यश्री की महिमा को समझाया था। यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

१ लुणावाडा मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए आचार्य महाराजश्री । २ लुणावाडा मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । ३ लुणावाडा मंदिर में सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री । ४ देत्रोज मंदिर प.पू. महाराजश्री के सानिध्य में कथा के वक्ता पू. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी तथा शास्त्री स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी एवं सभा संचालन करते हुए छोटे पी.पी. स्वामी ।५. सुरेन्द्रनगर मंदिरमें शाकोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री ।६. लालोडा (ईडर देश) शोभायात्रामें दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री एवं संत गण ।७. अहमदाबाद मंदिर में ३१ डिसम्बर ग्रहण निमित्त कीर्तन-भक्ति कार्यक्रम ।

Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

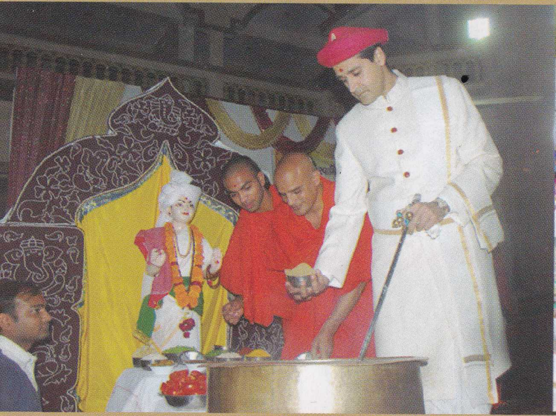

नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री साथ महंत स्वामी देवप्रकाशदास
इस प्रसंग पर हजारो श्रद्धालु लाभ लेने के लिए उपस्थित थे ।

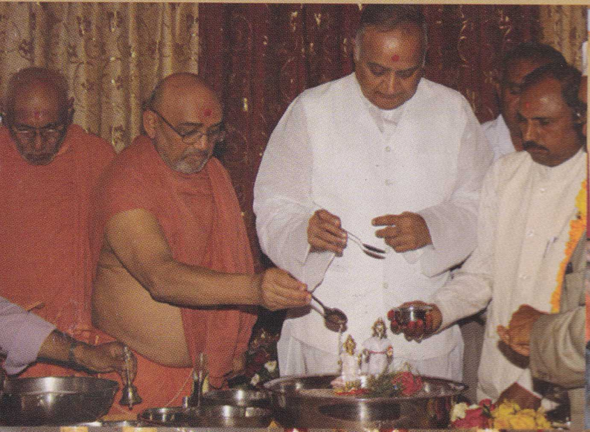

इस्ट आफ्रिका सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर नैरोबी दशाब्दी महोत्सव के अवसर पर श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री एवं भुज मंदिर के महंत स्वामी एवं सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी और देवप्रकाश एवं संत ।

Praful Kharsani